अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों
का महाकाल प्रलय

विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय
अहमदाबाद

अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों का महाकाल प्रलय

प्रथम संस्करण : अक्टुबर २००८
प्रतियाँ : ३०००

विश्व परिवर्तक ईश्वरीय विद्यालय
c/o राधे पार्टी प्लोट, न्यु राणीप, चेनपुर रोड,
चेनपुर गांव, अहमदाबाद - ३८२४७०

Website : www.discoveryofnewworld.com
www.vishnuparty.com
e.mail : info@discoveryofnewworld.com
anant98251@yahoo.com
info@vishnuparty.com
Tele. No. : 079-27521247, 64506091
M. No. 09327004765

निवेदन

यह अलौकिक ज्ञान भारत के शास्त्रों में से सारांश रूप में लेने का प्रयास किया गया है। आदि में भारत भूमि चैतन्य दैवी आत्माओं की पावन भूमि थी। यह दिव्य ज्ञान पूर्ण रीति से समझने के लिए साथ में अलौकिक चित्र भी दिये गए है। दिव्य ज्ञान बेहद के परम पिता परमात्मा के स्वमुख से उच्चारित किया हुआ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

परम पिता दिव्य विमान द्वारा बीज रूप आत्माओ को दिव्य स्वरूप प्रदान कराके स्थूल सृष्टि की आत्माओं को सूक्ष्म में रूपान्तरित करने आए है। यह ज्ञान धारण करके और उस की अनुभूति कर के विश्व कल्याण के कार्य में सहयोग दे सकते है। और अपनी अवस्था साकारी से आकारी देवताई पद प्राप्त करने का पुरूषार्थ कर सकते हैं। लेखन कार्य में किसी प्रकार की त्रुटि के लिए क्षमा याचना है।

हमारी Website : www.discoveryofnewworld.com से भी आप ओर अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकते है।

अहमदाबाद
ता. १-१०-२००८

मैनेजिंग ट्रस्टी
विश्व परिवर्तक इश्वरीय विद्यालय

दिव्य ज्ञान संदेश

महाकालेश्वर अकाल मूर्त सर्व शक्तिमान काल के पंजे से छुडानेवाले अमर लोक में ले जाने वाले ज्ञान सागर अमरनाथ पारसनाथ दिव्य दृष्टि के दाता मुक्ति और जीवन मुक्ति के दाता व्यक्त से अव्यक्त स्थिति में स्थित कराने वाले ज्ञान स्वरूप बनाने वाले नई दुनियाँ की स्थापना कराने वाले परमतत्त्वों और परमलाईट, डबल लाईट के स्थिति में स्थित करानेवाले काल के पंजे से छुड़ानेवाले बेहद का बाप बेहद के बच्चों का आह्वान कर रहे है। त्रिकाल दर्शी सभी आत्माओं की जन्मपत्री जानने वाले नई दुनियाँ के लिए नया ज्ञान देने वाले ज्ञान सूर्य त्रिलोकी नाथ तीनो कालों के आदि, मध्य, अन्त को जानने वाले साकार सृष्टि पर ज्ञान सूर्य प्रकट हो चुका है और ज्ञान सूर्य प्रकट होने पर सारे ज्ञान के राज खुल रहे है सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा। पर्दा खुल ही जाएगा। समय की समाप्ति भी हो ही जायेगी। वेदों शास्त्रो का सार, राज जानने वाले बेहद का बाप निराकारी से आकारी, आकारी से साकारी, साकार सृष्टि पर महाकालेश्वर ज्ञान सूर्य के रूप में प्रकट हो चुका है और १०८ विश्व विजेता अंत में अहमदाबाद पांडव भवन तैयार होने पर विश्व विजेता १०८ मनकों से कनेक्शन जोडने के लिए सभी सेन्टर से यहाँ ही आवेंगे ना क्योंकि गुजरात की राजधानी अहमदाबाद को सारे विश्व का लाईट हाऊस बनाना है। गुजरात को लाईट हाऊस बनाओ जो न सिर्फ गुजरात का लाइट हाऊस हो बल्कि विश्व का लाइट हाऊस हो।

मैनेजिंग ट्रस्टी
विश्व परिवर्तक इश्वरीय विद्यालय
चेनपुर, अहमदाबाद-३८२४७०

ता. १-१०-२००८

फोन : ०७९-२७५२१२४७

विषय सूचि

क्रम	विषय	पेज नं.
१.	निष्काम कर्म	१
२.	१४ लोकों का वर्णन	३
३.	हमारा ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कैसे हुई ?	१०
४.	काल चक्र व काल गति	२४
५.	प्रलय - महा प्रलय	३२
६.	अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों का महाकाल प्रलय	५६
७.	पितृयान - देवयान मार्ग	६६
८.	अव्यक्त वाणी (ब्रह्माकुमार कुमारी के लिये)	६८

१. निष्काम कर्म

जब तक हम सकाम होते है, तब तक हम कामना-युक्त कर्म करते रहते हैं। निष्कामता के स्वरूप का हम को ज्ञान ही नहीं है, यही कर्म का रूप धारण करती है और फल इच्छा द्वारा कर्म रूपी काल चक्र में आरूढ (स्थित) करवा कर पुनर्जन्म के चक्र में पहुँचा देती है। वास्तव में निष्काम वस्तु है आत्मा अथवा परमात्मा। उस निष्काम तत्व को जाने बिना हम निष्काम नहीं हो सकते। जब हम निष्काम तत्व को जान लेते है, तभी हम उस तत्व से युक्त हो कर निष्काम कर्म करते हुए निष्कर्मता को प्राप्त हो सकते है। इस से स्पष्ट होता है कि हम तत्वनिष्ठ हो कर ही यथार्थ संगत्यागी बन सकते है। समत्वयोग तभी सम्भव है, जब हम किसी समत्व में निष्ठ हों। कर्म ना करने से निष्कर्मता सिद्ध नहीं होती है। जिस कर्म में कामना का अभाव हो, वही निष्कर्मता है। ज्ञानयोगियों की निष्कर्मता अहंकृत-भाव के अभाव में है। निरन्तर कर्म करते अहंकृत भाव का अभाव रहे। यह अहंकृत भाव ही 'कर्म' है और इस का अभाव ही 'अकर्म' है। निरन्तर कर्म करते हम में निष्कर्मता की भावना बनी रहे - यही अकर्म भाव है। निष्काम तत्व को जाने बिना और फिर उस तत्व में निष्ठ हुए बिना जो हम निष्काम कर्म का ढोल पीटते हैं - यह अपने को धोखा देते है। कर्म भाव काल के अन्तर्गत हैं; कारण कि कर्म फल रूप है अर्थात पुनर्जन्म रूप है। अकर्म-भाव निष्काम है और कालातीत है। कामना युक्त कर्म काल की परिधि में है और कामना रहित कर्म कालातीत है। अहंकृत-भाव ही काल रूप है, यही काल चक्र में जीव को फंसाता है। इस भाव में काल की दाल नहीं गलती है। वासना ही काल है जो जीव को काल चक्र में फँसाता है। वासना हीनता ही 'निष्काम' है। अर्थात् 'निष्कर्मता' है। जो जीव को कालातीत बनाती है। यह निष्काम कर्म द्वारा 'काल निवृत्ति' है। निष्कर्मता का दर्शन

अपने जीवन में ही कर लेना चाहिए। तभी जीवन सफल है; नहीं तो जीवन निष्फल है। जब हम भगवद्धारणा द्वारा एक पत्थर में से भगवान को प्रकट कर सकते हैं तो क्या चेतन जीवों में से आत्म तत्व अथवा परमात्म तत्व को हम बाहर व्यक्त नहीं कर सकते ? निसंकल्प होकर कर्म करने से और दिव्य स्वरूप में स्थित हो कर ही कर्म करने से काल पर विजय है। यह निष्काम प्राप्ति केवल बेहद के परम पिता परमात्मा को दिव्य ज्ञान योग से जान कर ही कर सकते है।

२. १४ लोकों का वर्णन

यह १४ लोकों का १ ब्रह्माण्ड है।

जिस भूलोक में हमारा भारत वर्ष है। वह भूलोक अन्नत ब्रह्माण्डों के ठीक मध्य में है।

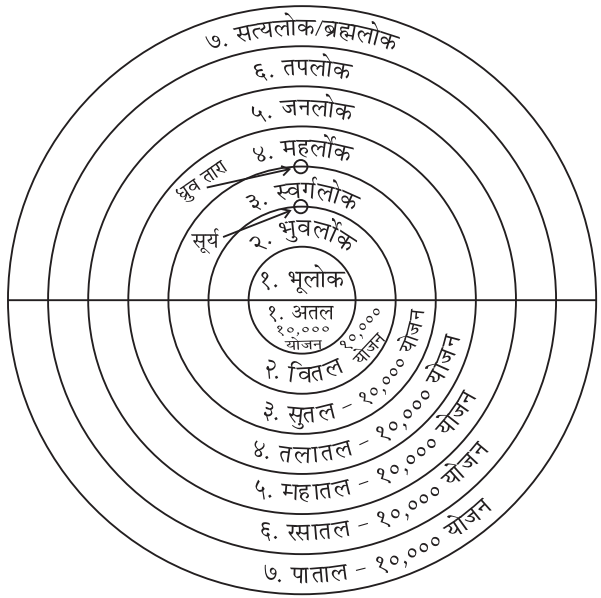

नीचे ५५ करोड नर्क लोक हैं :

चित्र - १

यह १४ लोकों का ब्रह्माण्ड (उत्तर से दक्षिण) Vertical ६० करोड़ योजन है। पूर्व से पश्चिम (Horizontal) ५० करोड़ योजन है। यह सारा ३० दिन प्रकाश वर्ष है। १ योजन = ४ मील।

३० X २४ X ६० X ६० X ३००००० = ७,७७,६०,००,००,०००

३० दिन के सैकिन्ड बनाये है फिर इन सैकिन्डों को ३ लाख किलोमीटर से गुना किया है। क्यों कि प्रकाश की गति एक सैकिन्ड में ३ लाख किलोमीटर है।

१४ भुवन का परिमाण (विस्तार) = ७ खरब ७७ अरब ६० करोड़ किलो मीटर का है।

ब्रह्मा पुरी में सूर्य की रोशनी जाती है, विष्णु और शिव पुरी में नहीं जाती।

९ ग्रहों की स्थिति और १४ भुवन (१४ लोकों) का वर्णऩ । जो कि ७ लोक विष्णु की नाभि से उपर है। भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्ग लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सत्य लोक (ब्रह्म लोक) जो ऊर्ध्व गति वाले है नाभि से नीचे सात (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) लोक है।

शिशुमार चक्र (गौह के आकार का एक तारामय समूह है) शिशुमार चक्र के पुच्छ के अग्र भाग में ध्रुव स्थित है।

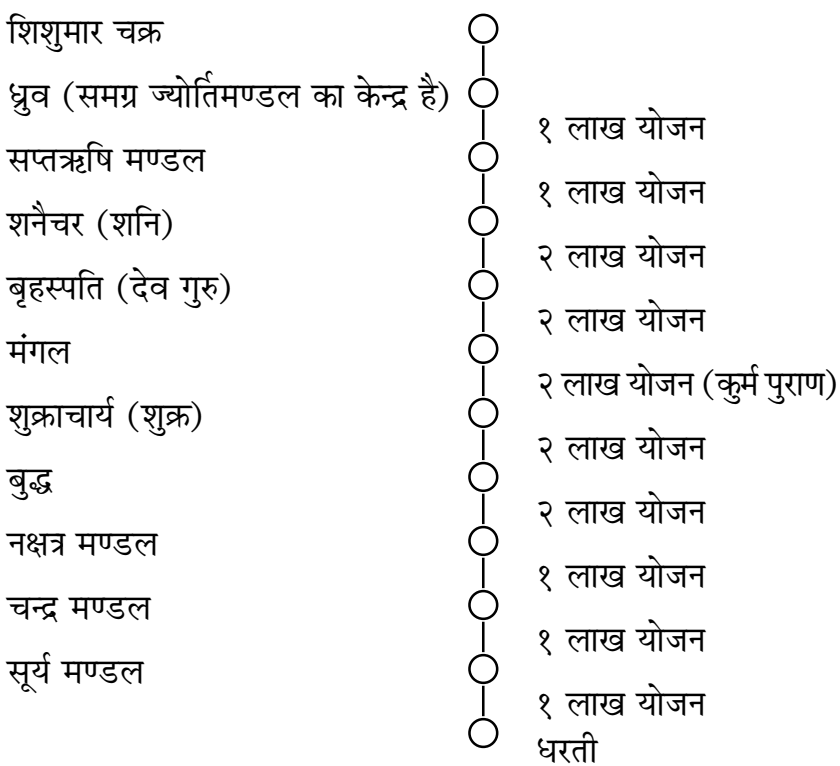

भूमि से १ लाख योजन पर सूर्य मण्डल है। सूर्य का व्यास ९ हजार योजन का है। इस से ३ गुना (२७,००० योजन) सूर्य का विस्तार है। सूर्य से १ लाख योजन पर चन्द्र मण्डल है। चन्द्र मण्डल का विस्तार सूर्य के विस्तार से २ गुना है। चन्द्र से १ लाख योजन दूर सम्पूर्ण नक्षत्र मण्डल प्रकाशित है। नक्षत्रों की संख्या ८० समुद्र १४ अरब २० करोड़ है। (सकन्ध पुरान Page 136) वायु पुराण में १८ संख्याओं का नाम इस प्रकार है।

परार्ध	अन्त	मध्य	समुद्र	पद्म	शंख	निखर्त	खरब	वृन्द
○	○	○	○	○	○	○	○	○
न्यर्बुद	अर्बुद	प्रयुत	नियुत	अयुत	सहस्त्र	शत	दस	एक
○	○	○	○	○	○	○	○	○

नक्षत्र मण्डल से २ लाख योजन ऊपर चन्द्र नन्दन बुद्ध का स्थान है। बुद्ध से २ लाख योजन ऊपर शुक्र (शुक्राचार्य) का स्थान है। शुक्र से २ लाख योजन ऊपर देवताओं के गुरू बृहस्पति का स्थान है। बृहस्पति से सुवर्ण (सोने) व पीले रंग की उत्पत्ति हुई है। बृहस्पति से २ लाख योजन ऊपर शनैचर का स्थान है। शनि से एक लाख योजन पर सप्त ऋषि मण्डल है। उन से भी १ लाख योजन पर ध्रुव की स्थिति है। (ध्रुव उत्थान पाद का पुत्र है) ध्रुव समस्त ज्योतिर्मण्डल का केन्द्र है। वे शिशुमार चक्र के पुच्छ के अग्र भाग में स्थित है। यह समस्त ज्योतिर्मण्डल वायु रूपी डोर से ध्रुव से बंधा है। आकाश में शिशुमार (गोह के आकार का तारामय समुह है।) ध्रुव स्वयं अपनी परिधी में घूमते हुए सूर्य, चन्द्रमा, तारे, नक्षत्र और ग्रह यह सभी ध्रुव केन्द्र से बंधे हुए है। शिशु मार का आधार विष्णु है। ध्रुव ने पृथ्वी पर १०,००० वर्ष तक राज्य किया था। सूर्य के नीचे राहु की स्थिति है। शुक्राचार्य का मण्डल चन्द्रमा के सोलवें भाग के बराबर है। बृहस्पति का विस्तार शुक्राचार्य से एक चोथाई कम है। इसी प्रकार मंगल,

शनेचर और बुद्ध ये बृहस्पति की अपेक्षा एक चौथाई कम है । नक्षत्र मण्डल का परिमाण पाँच सो, चार सौ, तीन सौ, दो सौ, एक सौ से ले कर कम से कम एक योजन, आधा योजन का है। इस से छोटा कोई नक्षत्र नहीं है ।

धरती पर जहाँ पैदल जाया जा सकता है उसे भूलोक कहते है । यमराज पुरी :- मनुष्य लोकसे यम लोक ८६००० योजन दूर हैं। इसी महा मार्ग से ही प्रेत यम लोक जाते हैं। इसी मार्ग से भयंकर वेतरणी नदी आती हैं। वराह पुराण के अनुसार यम नगर ४००० योजन लम्बा, २००० योजन चौडा हैं। नगर में विशाल राज मार्ग हैं। इन पर अनेक प्रकार के वाहनो का आना जाना हैं । सुन्दर महल और अट्टालिकाऐं हैं । यम राज का रुप पुन्यआत्माओं को विष्णु का दिखाई देता हैं। और पापात्माओं को भयानक रुप दिखाई देता हैं। यम राज के दूत जब यम राज के पास ले जाते हैं। तो यमराज उनके सूक्ष्म शरीर को देख कर पुन्य आत्माओ को कर्मो अनुसार स्वर्ग वा इन से भी उपर के लोकोमें भेजते हैं। पुन्यकर्म करने वाले जीवों से यमराज बहुत प्रसन्न रहते हैं और स्वर्ग जाते समय उन से प्रसन्नता की मुद्रा मे बातें करते हैं परन्तु पाप कर्म करने वालों के प्रति वे भयानक रुप से देखते हैं और उनको नीचे के लोको में वा ५५ करोड के नर्क लोक में भेजते हैं। यमराज को सावित्रीने वशमें किया। पहले उसने अपने अन्धे मातपिता के लिए ज्योति प्राप्त की फिर अपने पति सत्यवान को यम पाश (मृत्यु) से छुड़ाया और उनकी आयु की सीमा बढ़वा दी। अभी यम और उस के दूत भी मनुष्य बन गए हैं । मनुष्य अपने किये हुए कर्मो का फल स्वयं ही भुगतता हैं। भूमि और सूर्य के मध्यवर्ती लोक को भुवर्लोक कहते है। सूर्य पृथ्वी से १ लाख योजन पर है। ध्रुव तथा सूर्य के बीच की दूरी १४ लाख योजन है जिसे स्वर्गलोक कहा गया है। ध्रुव से उपर १ करोड़ योजन तक महर्लोक है। उससे ऊपर २ करोड़ योजन तक जनलोक है। उससे ऊपर

चार करोड योजन तक तप लोक है। उससे ऊपर ८ करोड़ योजन तक सत्य लोक है जिसे इस ब्रह्माण्ड का ब्रह्म लोक या ब्रह्मा पुरी भी कहते है।

भूवर्लोक सिद्ध और मुनियों से सेवित प्रदेश है।

स्वर्ग लोक में कल्प वृक्ष होते है। कल्प वृक्ष के नीचे जो ईच्छा करते थे वो मिल जाता था। कल्प वृक्ष से मद निकलता था वह खा लेते थे। स्वर्ग लोक में इन्द्रादि देवता रहते हैं। जो अच्छे कर्म करते हैं वे ऊपर के लोकों में उधर्व गति करते जाते है। स्वर्ग लोक में वा इस से भी उपर के लोकों में सुखी जीवन व्यतीत करते हैं। वेदादि शास्त्रों में कहे हुए यज्ञ, दान, जप, होम, तीर्थ तथा अन्य साधनो से सातों लोक साध्य है। वे उर्धव गति करते हैं। यह तीनों लोक भूः - भुवः - स्वः तीनों लोक अनित्य है। जन - तप - सत्य तीनों लोक नित्य हैं। नित्य और अनित्य के बीच में महर्लोक है। कल्प के अन्त में जब महाप्रलय होता है तब त्रिलोकी स्वर्था नष्ट हो जाती है। महर्लोक जन शून्य हो जाता है। परन्तु उसका अत्यन्त विनाश नहीं होता। सूर्य की रोशनी त्रिलोकी में जाती है। ध्रुव से ऊपर जो स्थान है वहाँ न तो सूर्य प्रकाशित होते है ना ही नक्षत्र और तारे ही उदित होते हैं। वहाँ लोग अपने ही तेज और अपनी ही शक्ति से प्रकाशित होकर स्थिर रहते है। ध्रुव भी अपने ही तेज से प्रकाशित है।

जितना पृथ्वी का परिमण्डल (घेरा) है उतना ही विस्तार और परिमण्डल भूवर्लोक का है।

महर्लोक में भृगु आदि, सप्त ऋषि आदि सिद्ध लोग रहते हैं। वहाँ महर्षि व महात्मा रहते है। जिनकी आयु एक कल्प होती है। जन लोक में ब्रह्मा के मानस पुत्र सनकादि निर्मल चितवाले और ध्रुव आदि निवास करते हैं। ध्रुव ने धरतीपर १०,००० वर्ष तक राज्य किया था।

तप लोक में वैराज नाम वाले देवता गणों का निवास है जो कि प्रसन्न और संताप रहित और दुःख रहित हो कर रहते है।

सत्य लोक (ब्रह्म लोक) में फिर ना मरने वाले अमर गण निवास करते हैं। यहाँ पर भी अलग अलग स्टेज की सूक्ष्म शरीरधारी आत्माऐं रहती है। जो ब्रह्मा से ब्रह्म ज्ञान ले कर ब्रह्मा समान हो जाते हैं।

पाताल लोक का वर्णन

भूमि की ऊँचाई ७०,००० योजन है। इस के भीतर ७ पाताल हैं। जो एक दूसरे से दस-दस हजार योजन की दूरी पर हैं। वहाँ की भूमियाँ सुन्दर महलों से सुशोभित हैं। वहाँ की भूमियाँ शुक्ल, कृष्ण, अरूण, पीतवर्ण कर्कशमयी (कंकरीली), शैली (पत्तथर की) तथा सुवर्णमयी है। उन में दानव दैत्य, यक्ष और बड़े बड़े नाग आदि की सैंकडों जातियाँ निवास करती हैं। उनमें दानव, दैत्य, यक्ष और बड़े बड़े नाग आदि की सैंकडों जातियाँ है। इन पातालों में न गर्मी है, न सर्दी है, न वर्षा है। न कोई कष्ट। जहाँ दिन में सूर्य की किरणे प्रकाश ही करती है घाम (धूप) नहीं करती है तथा रात में चन्द्रमाँ की किरणों से शीत नहीं होता केवल चान्दनी ही फैलाती है। जहाँ भक्ष्य भोजय महापानादि के भोगों का आनन्द सर्पों तथा दानवों आदि को समय जाता हुआ प्रतीत नहीं होता। जहाँ सुन्दर वन नदियाँ, सरोवर और कमलों के वन है। जहाँ नर कोकिलों की सुन्दर कूक गूँजती है। एवं आकाश मनोहारी है। जहाँ पाताल निवासी दैत्य, दानव, एवं नागगण द्वारा अति स्वच्छ आभूषण, सुगन्धमय अनुलेपन, वीणा वेणु मृदंगादि के स्वर तथा तूर्य - ये सब एवं भाग्यशालियों के भोगने योग्य है।

७ वें पाताल में हाटकेश्वर शिवलिंग है जिसकी स्थापना ब्रह्मा के द्वारा हुई है। वहाँ अनेका अनेक नागराज उसकी आराधना करते है। पाताल के नीचे बहुत अधिक जल है उसके नीचे ५५ करोड नर्क लोक हैं। जिसमें

पापी जीव गिराए जाते है।

विष्णु लोक और रूद्र (शिव) लोक इस ब्रह्माण्ड से बाहर हैं। (पेज नं. १३९, नया स्कन्ध पुराण)

यह १४ लोको (१४ भुवनों) का एक ब्रह्माण्ड है।

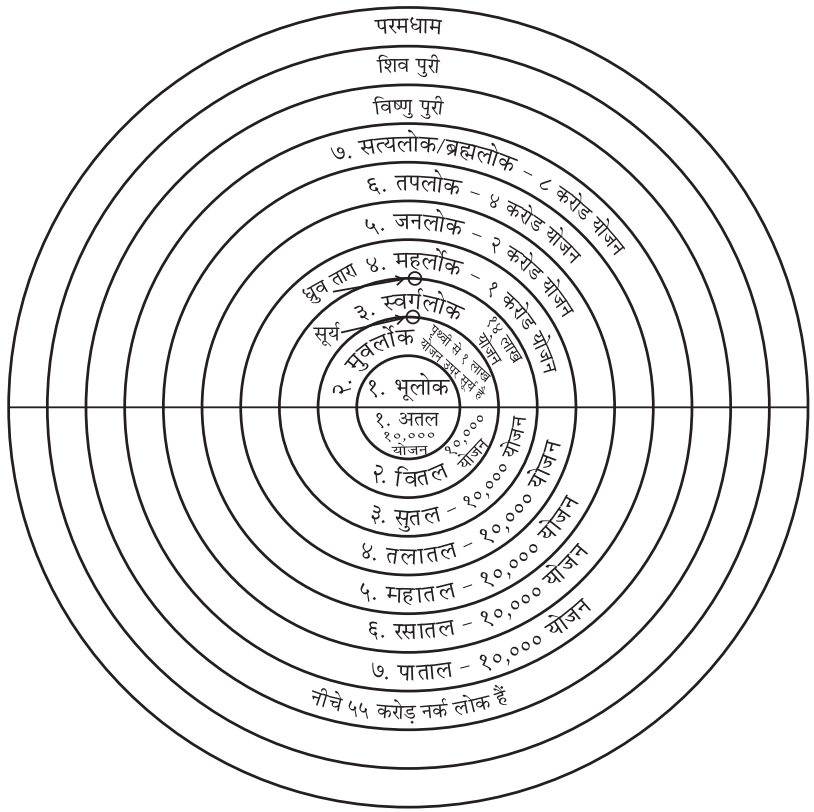

चित्र - २

३. हमारा इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कैसे हुई ?

- ब्रह्माण्डों की रचना शिव के द्वारा हुई है।
- महाब्रह्माण्डों की रचना महा शिव द्वारा हुई है।
- परम महा ब्रह्माण्डों की रचना परम महा शिव द्वारा हुई है।
- शिव एक तत्त्व है जिसे शिवत्व भी कहते है। यह काल रूपम है।
- महा शिव महाकाल रूप धारण करते हैं परम महाशिव परम महाकाल रूप धारण करते हैं।

शिव को परमात्मा कहते है। शिव को काल तत्व भी कहते हैं, काल माना समय। काल एक अचेतन तत्व है। काल = रूद्र रूपधारी

शिव एक तत्त्व है शिव को शिवत्व भी कहते हैं। शिव का जन्म परम तत्त्वों में होता है इस लिए शिव परमात्मा हो गया। जिनके जन्म परम तत्वों में होते हैं वे सभी परमात्माऐं हो गए। शिव निराकारी भी है और शिव आकारी भी है। शिव परम आत्मा है। शिव एक तत्त्व है। जिसे शिवत्व भी कहते है। देखे चित्र नं. ६ शिव काल रूप भी है। काल माना समय। शिव रूद्र रूप धारी भी है।

वेदान्त दर्शन में कहा है कि परब्रह्म को इच्छा हुई कि मैं एक से अनेक हो जाऊ। तब शिव द्वारा अम्बिका (शक्ति) की रचना हुई। फिर आकारी शिव द्वारा फिर शिव + शक्ति के आकारी स्वरूप से विष्णु की उत्पत्ति हुई। विष्णु अर्थात् नारायण। नार माना जल आयन माना स्वारी

(निवासस्थान) विष्णु को क्षीर सागर में दिखाते हैं।

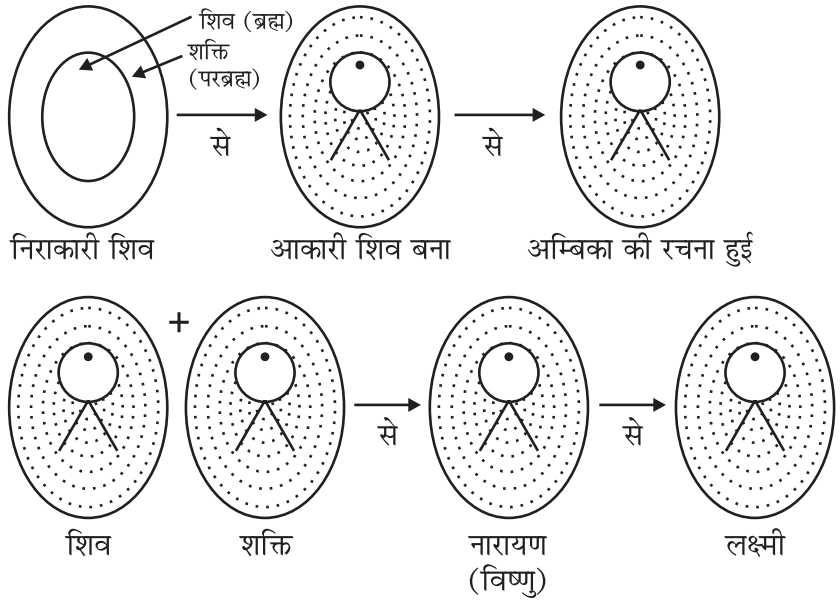

चित्र ६

विष्णु की शक्ति से एक पिण्ड की उत्पत्ति हुई। यह पिण्ड ब्रह्मा का शरीर अर्थात् यह ब्रह्माण्ड बना। इस पिण्ड के दो भाग हुए। उपर का भाग को भुवर्लोक और नीचे का भाग धरती बना। देखे चित्र नं. ७

ब्रह्मा से सप्त ऋषियों की उत्पत्ति हुई।

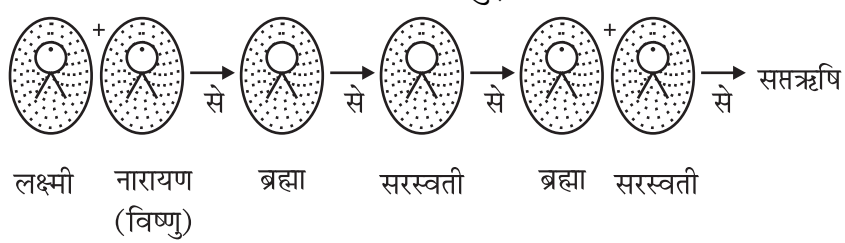

चित्र ७

सप्तऋषियों से मनुसतरूपा की उत्पत्ति हुई।

मनुसतरूपा से प्रजापति की उत्पत्ति हुई। प्रजापति से देवताओं की उत्पत्ति हुई। (देखें चित्र नं. ८)

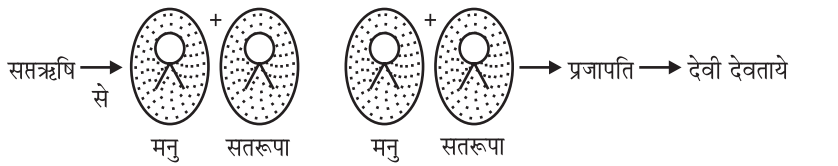

देवी देवताओं → उनके पुत्र पुत्रियां → पुत्र पुत्रीयों के पुत्र पुत्रियां → इसी प्रकार वंश बढ़ता गया
से
से

चित्र ८

देवी-देवताओं से पुत्र-पुत्रीयों की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार वंश की वृद्धि हुई शिव से काल अर्थात समय की उत्पत्ति हुई इसलिए शिव को काल तत्त्व भी कहते है।

काल एक अचेतन तत्त्व है। यह आत्म शक्ति द्वारा गतिशील है।

जब शिव में पाजिटिव पावर होती है तो वह शिवत्व होता है। तब वह ब्रह्माण्ड की रचना करता है। देखे चित्र नं. १ और २ जब वह ब्रह्माण्ड को समेट कर अपनें में समाना चाहता है तब वह कालाग्नि बरसा कर (रूद्र रूप) धारण करता है। तब वह ब्रह्माण्ड को समेट कर अपने आकारी स्वरूप के जिस रोम कूप से यह ब्रह्माण्ड बनाया था इस ब्रह्माण्ड का एक सैल बना कर उसी रोम कूप में वापिस समा लेता है इस लिए शिव को काल तत्व भी कहते हैं, तो उसमें नेग्टिव शक्ति आ जायेगी। तब वह जलने लग जाता है। तब वह पावर को चार्ज करने के लिए महा शिव में समा जाएगा। शिव और उनकी सहयोगनी शक्तियाँ हैं ब्रह्माण्डों की रचियता।

जो यह हमारा ब्रह्माण्ड है जिसमें हमारा भारतवर्ष है। ऐसे अनन्ता अनन्त, कोटि कोटि ब्रह्माण्ड हैं। परलोक और पुनर्जन्म का (पुरानी - पेज

नं. २ और ३ नई पेज नं. ६ और ७) → अनन्ता अनन्त ब्रह्मांड स्वरुप इस संसार में एक एक ब्रह्मांड में अनन्ता अनन्त जीव हैं। एक एक जीव के अनन्ता अनन्त जन्मो में अनन्ता अनन्त कर्म हैं। अनन्ता अनन्त कर्मो में एक एक कर्म में अनन्ता अनन्त फल हैं। (जिस भू लोक में हमारा भारत वर्ष हैं वह भू लोक अनन्त, ब्रह्मांडों के ठीक मध्य में हैं परलोक और पुनर्जन्म (पुरानी का पेज नं. ३७७ और नई का ३८५)

इस लिए अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्ड हैं अनन्त कोटि कोटि परम तत्व हैं। अनन्त कोटि कोटि कलर हैं और अनन्त कोटि कलर कोम्बिनेशनज हैं। नैन, नक्श, रुप, रंग अनन्त हैं। वहाँ की कल्पना करना भी मुश्किल हैं। क्यों कि कोटि कोटि ब्रह्मांडो में अलग अलग परम तत्व हैं। एक का एक से नहीं मिलता। (पेज नं. ६५१ - दैवी भागवत → एक एक ब्रह्माण्ड में अलग अलग ब्रह्मा, विष्णु और शिव है) (दैवी भागवत → पेज नं. ६३९) → महाकाल के महाविराट रूप में उनके रोम कूपों में असंख्य ब्रह्माण्ड विराजमान है) परलोक और पुनर्जन्म → (पेज नं. ३८९ पुरानी और पेज नं. ४०६ नई) - (एक पाद माया विभूति) में ही युगपत प्रतिपल अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड बना बिगड़ा करते है) युग माना समय प्रमाण, प्रति पल माना हरेक सैकिन्ड। महा विष्णु का एक सैकिन्ड = महा कल्प का पूरा समय = ब्रह्मा के १०० वर्ष = ३६,००० कल्प। एक कल्प का समय (दिन + रात = अहोरात्र) = ८,६४,००,००,००० मानवीय वर्ष। ब्रह्मा का अहोरात्र = आठ अरब चौंसठ करोड़ मानवीय वर्ष। (पेज नं. ३८९ पुरानी पेज नं. ४०७ नई परलोक और पुनर्जन्म) - प्रकृति अन्तरगत समस्त लोक काल रूप अग्नि के द्वारा (प्रलय काल में) जला दिये जाते हैं। जिस हमारा ब्रह्माण्ड में हम रहते हैं देखिए चित्र नं. १ और २।

पेज नं. १३९ स्कन्ध पुरान - विष्णु लोक और रूद्र लोक को इस

ब्रह्माण्ड के बाहर बताया जाता है।

महा ब्रह्माण्ड का वर्णन → देखे चित्र नं. ३

महा शिव है महा ब्रह्माण्ड का रचियता। नीचे महा ब्रह्माण्ड का स्टरक्चर (चित्र के रूप में) दिखाया गया है। बीच में महा ब्रह्माण्ड का महा परम धाम दिखाया है। इस महा परमधाम के उपर वाले घेरे में महा शिव और महा शक्ति रहेते हैं। महा शिव और महा शक्ति को महाकाल और महाकाली भी कहते हैं। महा शिव और महा शक्ति को महा परमात्मा कहते है।

यह एक महा ब्रह्माण्ड है।

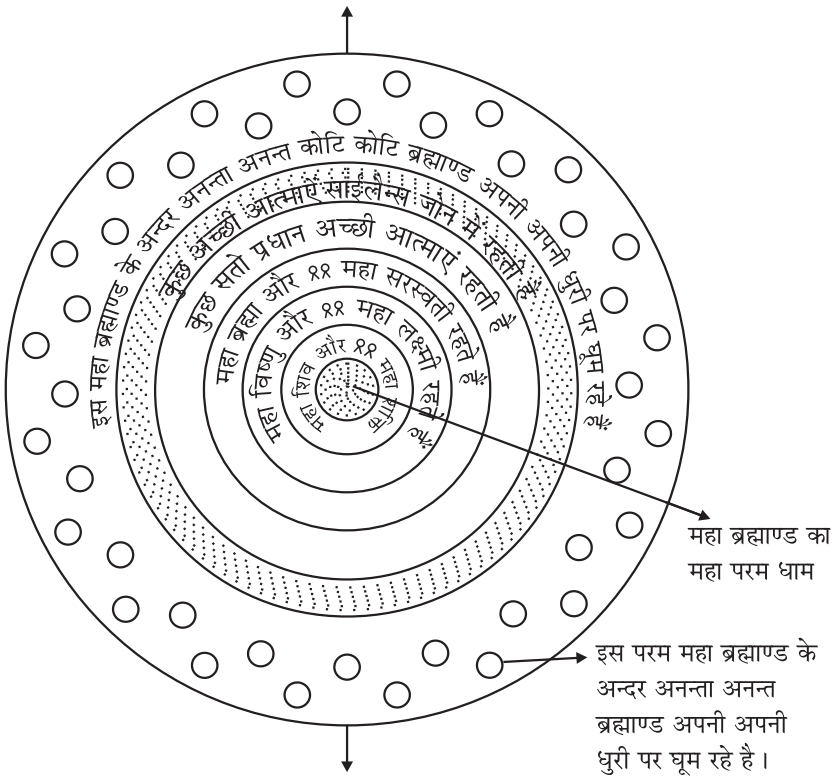

यह एक महा ब्रह्माण्ड है जो अपनी धूरी पर घूम रहा है।

चित्र - ३

महा शिव और महा शक्ति इस महा ब्रह्माण्ड के रचियता है। ऐसे अनन्ता अनन्त महा ब्रह्माण्ड हैं। इस के उपर वाले घेरे में महा विष्णु और महा लक्ष्मी रहते हैं। इस से भी ऊपर वाले घेरे में महा ब्रह्मा और महा सरस्वती रहते हैं। इस से भी ऊपर वाले घेरे में कुछ सतोप्रधान अच्छी आत्माऐं रहती है इससे भी ऊपर वाले घेरे में कुछ अच्छी आत्माएं साईलैन्स जोन में रहती हैं। इसके ऊपर एक बड़ा घेरा दिखाया है। इस घेरे में अनन्ता अनन्त कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड अपनी-अपनी धुरी पर घूम रहे हैं।

सब से पहले हमारा परम महा ब्रह्माण्ड देखे चित्र नं. ४ नीचे आया जिसमें हमारा ब्रह्माण्ड था।

उस परम महा ब्रह्माण्ड में से हमारा महा ब्रह्माण्ड देखे चित्र नं. ३ नीचे आया जिसमें हमारा भारत वर्ष बना था। इस महा ब्रह्माण्ड में से भी हमारा ब्रह्माण्ड नीचे आया। जिस ब्रह्माण्ड के भूलोक में हमारा भारत वर्ष बना। देखे चित्र नं.१ और २ यह हमारा भूलोक पर हमारा भारत वर्ष वाला ब्रह्माण्ड बेहद के परम धाम का सेन्टर बना। यह हमारा ब्रह्माण्ड अनन्ता अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्डो, महा ब्रह्माण्डो और परम महा ब्रह्माण्डो से घिरा हुआ हैं। यह सभी अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड, महा ब्रह्माण्ड परम महा ब्रह्माण्ड हमारे भूलोक के भारत वर्ष वाले ब्रह्माण्ड के चारो और अपनी अपनी धुरी पर घूम रहे हैं। हमारा ब्रह्माण्ड सब से पहले हमारा महा ब्रह्माण्ड वाले महा शिवने शिव से संकल्पो में कह कर बनवाया था। और शिव ने ब्रह्मा से कह कर बनवाया था। सब से पहले जो हमारा ब्रह्माण्ड बना वह अधिक सतो प्रधान था। इसी प्रकार अनन्ता अनन्त कोटि कोटि शिव शक्तियो द्वारा हमारा ब्रह्माण्ड बनते गए, बनते गए। (एसे ही अनन्ता अनन्त बेअन्त ब्रह्माण्ड बनते गए, बनते गए और बिगडते गए, बिगडते गए)

जो हमारा सब से पहला ब्रह्माण्ड बना था वह अब तक के बने

सभी ब्रह्माण्डो से अधिक सतो प्रधान था।

जो यह हमारा ब्रह्माण्ड है जिसमें हमारा भारतवर्ष है। ऐसे अनन्ता अनन्त, कोटि कोटि ब्रह्माण्ड हैं। परलोक और पुनर्जन्म का (पुरानी - पेज नं. २ और ३ नई पेज नं. ६ और ७) → अनन्ता अनन्त ब्रह्मांड स्वरुप इस संसार में एक एक ब्रह्मांड में अनन्ता अनन्त जीव हैं। एक एक जीव के अनन्ता अनन्त जन्मो में अनन्ता अनन्त कर्म हैं। अनन्ता अनन्त कर्मो में एक एक कर्म में अनन्ता अनन्त फल हैं। (जिस भू लोक में हमारा भारत वर्ष हैं वह भू लोक अनन्त, ब्रह्मांडों के ठीक मध्य में हैं परलोक और पुनर्जन्म (पुरानी का पेज नं. ३७७ और नई का ३८५)

इस लिए अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्ड हैं अनन्त कोटि कोटि परम तत्व हैं। अनन्त कोटि कोटि कलर हैं और अनन्त कोटि कलर कोम्बिनेशनज हैं। नैन, नक्श, रुप, रंग अनन्त हैं। वहाँ की कल्पना करना भी मुश्किल हैं। क्यों कि कोटि कोटि ब्रह्मांडो में अलग अलग परम तत्व हैं। एक का एक से नहीं मिलता। (पेज नं. ६५१ - दैवी भागवत → एक एक ब्रह्माण्ड में अलग अलग ब्रह्मा, विष्णु और शिव है) (दैवी भागवत → पेज नं. ६३९) → महाकाल के महाविराट रूप में उनके रोम कूपों में असंख्य ब्रह्माण्ड विराजमान है) परलोक और पुनर्जन्म → (पेज नं. ३८९ पुरानी और पेज नं. ४०६ नई) - (एक पाद माया विभूति) में ही युगपत प्रतिपल अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड बना बिगड़ा करते है) युग माना समय प्रमाण, प्रति पल माना हरेक सैकिन्ड। महा विष्णु का एक सैकिन्ड = महा कल्प का पूरा समय = ब्रह्मा के १०० वर्ष = ३६,००० कल्प। एक कल्प का समय (दिन + रात = अहोरात्र) = ८,६४,००,००,००० मानवीय वर्ष। ब्रह्मा का अहोरात्र = आठ अरब चौंसठ करोड़ मानवीय वर्ष। (पेज नं. ३८९ पुरानी पेज नं. ४०७ नई परलोक और पुनर्जन्म) - प्रकृति अन्तरगत समस्त लोक काल

रूप अग्नि के द्वारा (प्रलय काल में) जला दिये जाते हैं। जिस हमारा ब्रह्माण्ड में हम रहते हैं देखिए चित्र नं. १ और २।

पेज नं. १३९ स्कन्ध पुरान - विष्णु लोक और रूद्र लोक को इस ब्रह्माण्ड के बाहर बताया जाता है।

यह महा ब्रह्माण्ड भी अपनी धुरी पर घूम रहा है। महा शिव है महा ब्रह्माण्ड का रचियता - परलोक और पुनर्जन्म (पेज नं. २०७ पुरानी, पेज नं. २४७ नई) → महा काल की शक्ति अनन्त है। उसके रोम रोम में अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड हैं। महा शिव ही महाकाल बन कर अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों को १ सैकिन्ड में अपने अन्दर समा लेता है। - परलोक और पुनर्जन्म → (पुरानी पेज नं. ३८९, नई पेज नं. ४०६) (एक पाद माया विभुति) में ही → युग पत प्रतिपल अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड बना बिगड़ा करते है। युग पत माना समय प्रमाण, प्रतिपल माना प्रति सैकिन्ड। महा ब्रह्माण्ड में पावर नहीं है तो महा शिव महा काल स्वरूप धारण कर के जिन जिन रोम कूपों से यह अनन्तानन्त कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड निकले थे वापिस उन्ही रोम कूपों में अनन्तकोटि ब्रह्माण्डो का एक-एक सैल बनाकर समा लेगा। अब एक एक सैल नैग्टिव पावर का बना है। जब शिव से रचना करवाई थी तब शिव में पोजिटिव पावर थी। जब एक-एक शिव ने वह एक एक ब्रह्माण्ड समेट लिए तब शिव शक्तियों में भी नैग्टिव पावर के सैल आ गए। इसलिए अब महा शिव इन नेग्टिव पावर के ब्रह्माण्डों को अपने मे समेटेगा तो उस महा शिव में भी नैग्टिविटी भर जाएगी। तब महा शिव भी जलने लग जाएगा। तब महा शिव को अपना खुद का पावर चार्ज करना है। तब वह किस में से निकला था ? परम महा शिव में से। परम महा शिव के जिस रोम कूप में से निकला था उसी रोम कूप में वापिस सैल बन कर समा जाएगा।

इस ब्रह्माण्ड जैसे अनेक ब्रह्माण्ड है। (परलोक और पुनर्जन्म) पेज नं. १७ जो कि विराट पुरूष में समाए हुए है।

परम महा ब्रह्माण्ड का वर्णन → देखे चित्र नं. ४

कुछ कमजोर आत्माएँ जिन का जन्म इस धरती से १५० अरब प्रकाश वर्ष की दूरी से भी उपर परमतत्त्वों (परम अग्नि तत्त्व और परम वायु तत्त्व) से ८.५ कला से ८.१ कला के बीच में हुआ था। उनमें दो भाग बन गए थे। इनमें भी कुछ श्रेष्ठ परमतत्त्वों की आत्माएँ थी जिनमें परमतत्त्वों की मात्रा लगभग १०० % थी वे कुछ अधिक शक्तिशाली होने के कारण वे उपर के स्तर पर उड़ती थी। और जिन में परम तत्त्वों की शक्ति कुछ कम प्रतिशत में थी वे उनकी अपेक्षा शक्ति कम होने के कारण उनको नीचे गिरना अच्छा लगता था। वहाँ से सूक्ष्म में आपस में झगड़ते झगड़ते वे नीचे आते गए। जिस परम महा ब्रह्माण्ड के भी महा ब्रह्माण्ड में और महा ब्रह्माण्ड के भी जिस ब्रह्माण्ड में वो रहते थे। वह परम महा ब्रह्माण्ड सबसे पहले नीचे आया। देखे चित्र नं ४ :- ऐसे अनन्त कोटी परम महा ब्रह्माण्ड होंगे। इनके रचयिता परम महा शिव सभी लगभग धरती पर आ गए है यह सभी परम महा ब्रह्माण्ड अपनी अपनी धुरी पर घूमते है तभी कुछ परम आकाश तत्त्व नीचे आता है ।सब से पहले हमारा परम महा ब्रह्माण्ड देखे चित्र नं. ४ नीचे आया जिसमें हमारा ब्रह्माण्ड था।

उस परम महा ब्रह्माण्ड में से हमारा महा ब्रह्माण्ड देखे चित्र नं. ३ नीचे आया जिसमें हमारा भारत वर्ष बना था। इस महा ब्रह्माण्ड में से भी हमारा ब्रह्माण्ड नीचे आया। जिस ब्रह्माण्ड के भूलोक में हमारा भारत वर्ष बना। देखे चित्र नं.१ और २ यह हमारा भूलोक पर हमारा भारत वर्ष वाला ब्रह्माण्ड बेहद के परम धाम का सेन्टर बना। यह हमारा ब्रह्माण्ड अनन्ता अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्डो, महा ब्रह्माण्डो और परम महा ब्रह्माण्डो से घिरा हुआ हैं। यह सभी अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड, महा ब्रह्माण्ड परम महा ब्रह्माण्ड हमारे भूलोक के भारत वर्ष वाले ब्रह्माण्ड के चारो और अपनी अपनी धुरी पर घूम रहे हैं। हमारा ब्रह्माण्ड सब से पहले हमारा महा ब्रह्माण्ड वाले महा शिवने शिव से संकल्पो में कह कर बनवाया था। और

शिव ने ब्रह्मा से कह कर बनवाया था। सब से पहले जो हमारा ब्रह्माण्ड बना वह अधिक सतो प्रधान था। इसी प्रकार अनन्ता अनन्त कोटि कोटि शिव शक्तियो द्वारा हमारा ब्रह्माण्ड बनते गए, बनते गए। (एसे ही अनन्ता अनन्त बेअन्त ब्रह्माण्ड बनते गए, बनते गए और बिगडते गए, बिगडते गए)

जो हमारा सब से पहला ब्रह्माण्ड बना था वह अब तक के बने सभी ब्रह्माण्डो से अधिक सतो प्रधान था।

परम महा शिव को परम महा परमात्मा कहते है।

इस परम महा ब्रह्माण्ड का रचियता परम महा शिव है। इस परम महा ब्रह्माण्ड के बीच में परम महा परम धाम दिखाया गया है। इस परम महा परम धाम के उपर वाले घेरे में परम महा शिव और परम महा शक्ति रहते हैं। जो इस परम महा ब्रह्माण्ड के रचियता है। इस के उपर वाले घेरे में महा शिव और महा शक्ति रहते हैं। इस से भी उपर वाले घेरे में कुछ अच्छी आत्माऐं साईलैन्स जोन में रहती है। इस से भी उपर वाले बडे घेरे में अनन्ता अनन्त कोटि कोटि महा ब्रह्माण्ड अपनी-अपनी धूरी पर घूम रहे हैं। जिन के रचियता महा शिव और महा शक्ति है। सब अलग अलग महा ब्रह्माण्डों के रचियता अलग अलग महा शिव और महा शक्तियाँ है। यह परम महा ब्रह्माण्ड अपनी धुरी पर घूम रहा है। इस परम महा ब्रह्माण्ड का विनाश नहीं होता है। हमारे भारत वर्ष का ब्रह्माण्ड अनन्त ब्रह्माण्डों के मध्य में है। जिस हमारा ब्रह्माण्ड में हमारी पृथ्वी बनी। यह परम महा ब्रह्माण्ड स्थूल वतन में आ गया है। सबसे पहले यही परम महा ब्रह्माण्ड नीचे आया। ऐसे परम महा ब्रह्माण्ड लगभग ५०० करोड़ है। इन सभी ५०० करोड़ परम महा ब्रह्माण्डों के रचियता ५०० करोड़ परम महा शिव है। एक-एक परम महा ब्रह्माण्ड के रचयिता अलग अलग परम महा शिव और परम महा शक्तियाँ हैं। यह सभी परम महा शिव परम महा परमात्माऐं है। एक-एक महा ब्रह्माण्ड में अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड अपनी अपनी धुरी

पर घूम रहे है। इन ब्रह्माण्डों के रचियता शिव है। ऐसे अनन्ता अनन्त कोटि-कोटि जितने ब्रह्माण्ड है उन सब के रचियता उतने ही अलग अलग शिव है।

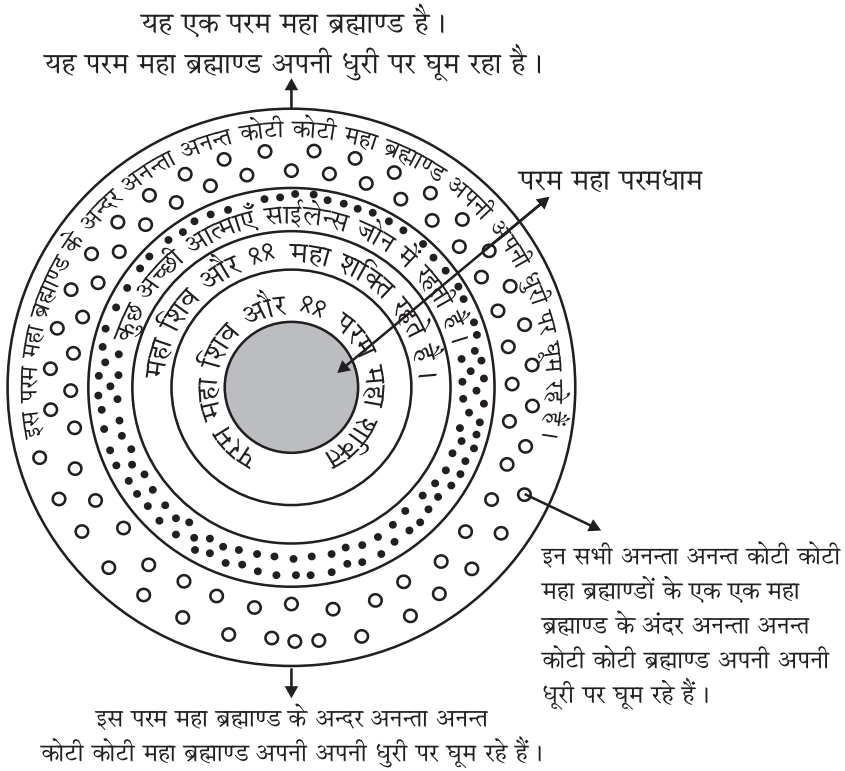

चित्र - ४

५०० करोड परम महाशिव और परम महा शक्तियों के रचियता ६.५ करोड परम परम महाशिव हैं। ६.५ करोड परम परम महा शिव के रचियता २ करोड़ मूल वतन वाले हैं इन २ करोड़ मूल वतन वालों के रचियता ९ लाख परम धाम वाले है। इन ९ लाख निराकारी आत्माओं के रचियता १६१०८ परम धाम वाले है। इन १६१०८ के भी रचियता १००८ हैं जो कि विष्णु की माला में आने वाले हैं। इन १००८ के रचियता १०८

बीज रूप माला वाले है। यह १०८ आत्माऐं पदमा पदम महा शिव हैं। इन १०८ के रचियता बेहद के मात पिता है। वे बेहद के महा शिव और बेहद की महा शक्ति है। ये बेहद के महा काल और महा काली है। जोकि सारी बेहद की सृष्टी (परमधाम + मूल वतन + सूक्ष्म वतन + स्थूल वतन) के रचियता है। जो कि एक ही जन्म के लिए सारी बेहद और हद की सृष्टि को व्यक्त से अव्यक्त बनाने के लिए साधारण मनुष्य के रूप में आए हुए है। इन का जन्म दिव्य और अलौकिक है। बेहद के महाकाल भूतों का संहार करने वाले बेहद के रूद्र रूप धारी इन सभी अनन्ता अनन्त कोटि कोटि परम महा ब्रह्माण्डो को बेहद का रूद्र रूप धारण करके उपर ८.५ कला से बेहद के परम अग्नि तत्व की बारिश करके और बेहद की कालाग्नि बरसा कर सभी परम महा ब्रह्माण्डों को अपने महाविराट स्वरूप के रोम कूपों में एक सैकिन्ड में समा लेगें। सभी परम महा ब्रह्माण्डो को अव्यक्त में बदल देंगे और बेहद के भूत नाथ बन कर सभी ३ तत्वों वाली आत्माओं को मुक्ति दे कर अपने में समा लेंगे। क्यों कि परम महा शिव में परम महा ब्रह्माण्डों को समेटने की पावर नहीं है।

परलोक और पुनजन्म (पेज नं. २२७ पुरानी, पेज नं. २४७ नई) → महा काल की शक्ति अनन्त है उस के रोम रोम में अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड है।

यह परम महा ब्रह्माण्ड नीचे आता गया यह सब से पहले नीचे आया इस परम महा ब्रह्माण्ड में से भी एक महा ब्रह्माण्ड जिस की रचना महा शिव ने की थी सब से पहले नीचे आया। वही महा ब्रह्माण्ड नीचे आया। जिस महा ब्रह्माण्ड (चित्र नं. ३ देखे):- के भी एक ब्रह्माण्ड में जिस में हमारा भारत वर्ष बना। जिसमें यह १४ भुवन का हमारा हद का ब्रह्माण्ड बना। (देखे चित्र नं. १ और २):- सबसे पहले हमारा यह छोटा सा ब्रह्माण्ड नीचे आया हमारा इस ब्रह्माण्ड की रचना सब से पहले महा शिव ने संकल्पों से कह कर शिव से करवाई थी और शिव ने ब्रह्मा से करवाई थी

। (चित्र नं. १ देखे) १४ भुवन के ब्रह्माण्ड के उपर विष्णु पुरी और शिव पुरी दिखाए गए है इस के उपर परम धाम हैं (चित्र नं. २ देखे) यह विष्णु लोक और रूद्र लोक इस १४ भुवन के ब्रह्माण्ड के बाहर बताया जाता है (देखे – सकन्ध पुरान पेज नं. १३९)

जिस भू लोक में हमारा भारत वर्ष है वह भू लोक अनन्त ब्रह्माण्डों के ठीक मध्य में है। – देखे परलोक और पुनर्जन्म (पुरानी पेज नं. ३७७, नई पेज नं. ३९५)

कुछ कमजोर आत्माऐं जो नीचे आती गई उन में पावर ना रहने के कारण उन्होंने जो श्रेष्ठ आत्माएँ थी जिन में परम तत्वो की पावर १००% थी उन को संकल्पों से नीचे गिराना शुरू किया तब महा शिव ने हमारा ब्रह्माण्ड के शिव से और शिव ने ब्रह्मा द्वारा हमारा १४ भुवन के ब्रह्माण्ड की रचना करवाई देखे चित्र नं. १ और २ और कुछ कमजोर आत्माऐं नीचे आती गई आती गई उनकी नेग्टिविटी के कारण उनके संकल्पों से यह धरती बन गई। इस धरती पर सबसे पहले हमारा भारतवर्ष बना। हमारा यह हद का ब्रह्माण्ड इस बेहद के परम धाम का सैन्टर बना। हमारा इस ब्रह्माण्ड के चारों और १५० अरब प्रकाश वर्ष की दूरी से भी उपर तक अनन्ता अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्ड, महा ब्रह्माण्ड, परम महा ब्रह्माण्ड अपनी–अपनी धुरी पर घूम रहे है। इन सभी ब्रह्माण्डो के शिव, महा ब्रह्माण्डो के महा शिव और परम महा ब्रह्माण्डो के परम महा शिव नीचे आ गए हैं इस में से १०% आकारी है। बाकी साकारी है।

परलोक और पुनर्जन्म का (पुरानी–पेज नं. २ और ३ नई पेज नं. ६ और ७):– अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड स्वरूप इस संसार में एक एक ब्रह्माण्ड में अनन्ता अनन्त जीव हैं। एक एक जीव के अनन्ता अनन्त जन्मों में अनन्ता अनन्त कर्म हैं। अनन्ता अनन्त कर्मों में एक एक कर्म में अनन्ता अनन्त फल हैं। (जिस भू लोक में हमारा भारत वर्ष है वह भू लोक अनन्त ब्रह्माण्डों के ठीक मध्य में है। देखे :– परलोक और पुनर्जन्म (पुरानी का

पेजनं. ३७७ और नई का ३९५)

इस लिए अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्ड है अनन्त कोटि कोटि परम तत्त्व है। अनन्त कोटि कोटि कलर हैं और अनन्त कोटि कलर कोम्बिनेशनज हैं। नैन, नक्श, रूप, रंग अनन्त है। वहाँ की कल्पना करना भी मुश्किल है। क्यों कि कोटि कोटि ब्रह्माण्डों में अलग अलग परम तत्व है। एक का एक से नही मिलता।

पेज नं. ६३९ : दैवी भागवत → महा काल के महाविराट स्वरूप में उनके रोम कूपो में असंख्य ब्रह्माण्ड विराजमान है। उनमें से यह एक छोटा सा ब्रह्माण्ड है। पेज नं. १३९, सकन्ध पुराण विष्णु लोक और रूद्र (शिव) लोक इस ब्रह्माण्ड से बाहर है।

पेज नं. ६४१ दैवी भागवत → एक एक ब्रह्ण्ड में अलग अलग ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं।

पेज नं. १४० (स्कन्ध पुराण) → जैसा यह ब्रह्माण्ड है ऐसे अरबों और करोड़ों ब्रह्माण्ड प्रकृति के आवरण में स्थित हैं।

पेज नं. ३८८ – पुरानी, (नई पेज नं. ४०६) पर लोक और पुर्नजन्म → (एक पाद माया विभूति) में ही युग पत प्रतिपल, अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड बना बिगड़ा करते हैं।

पेज नं. २४७ – नई पेज नं. २२७, पुरानी प्रलोक और पुर्नजन्म → महाकाल की शक्ति अनन्त है। उनके रोम रोम में अनन्त ब्रह्माण्ड है।

यह परम महा ब्रह्माण्ड अपनी धुरी पर घूमता है।

४. कालचक्र व कालगति

समय का पुनरावर्तन ही काल चक्र है। गति (मोशन) एक अव्यक्त तत्व ही है। साइन्स वाले भी कहते हैं कि गति बिना संसार की कोई क्रिया हो नही सकती। यह गति बेहद के महा काल अर्थात बेहद के परम पिता परमात्मा से मिलती है। समस्त संसार गतिशील है। संसार के संसरने को (चलने को ही गति कहते है।) यह काल (समय) गति शील है। हृदय से युक्त होती है तो 'हृदय गति' कहलाती है। इसी प्रकार नाड़ी की गति, 'रक्त गति', मन की गति, बुद्धि की गति, जीव गति, परम गति, यही काल से युक्त होती है तो काल गति कहलाती है। संसार का अणु-अणु, परमाणु-परमाणु, हरेक सितारे, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र मण्डल, ग्रह, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, ब्रह्माण्ड, महा ब्रह्माण्ड, परम महा ब्रह्माण्ड, सभी लोक, परलोक, जीवों का जीवन, गति से ही गतिशील है। शुभ कर्म से जीव की गति स्वर्ग में और पाप कर्म से गति नर्क में होती है। यह बेहद का गति तत्व ना हो तो सारा जगत पुरूषार्थ हीन हो जाए। सारा संसार सिकुड कर ठोस (जड़) बन जाए। कोई हिल भी ना सके। पुरूष का पुरूषत्व गति ही है। क्यों कि कर्म गति ही सब की गति का कारण है। स्वभाव और संस्कारों का बार बार पुनरावर्तन ही समय का पुनरावर्तन है। यह गति जब इच्छा से युक्त होती है तो इच्छा शक्ति कहलाती है, ज्ञान से युक्त होती है तो ज्ञान शक्ति कहलाती है। यह काल (समय) गतिशील है। अब यह गति कहाँ से मिलती है ? बेदह के पावर हाऊस से। अब बेहद के पावर हाऊस कौन है ? बेहद के महा शिव और बेहद के महा शक्ति। श्वास का अन्दर आना और बाहर जाना यह एक क्रम चक्र है। मनुष्य दिन में लगभग २१,६०० श्वास लेता और छोड़ता है इसी क्रम से उसकी रात पूर्ण हो जाती है। काल श्वास से अभिन्न है क्यों कि काल श्वास की अवधि बन कर श्वास के साथ ही

अन्दर जाता है। फिर श्वास के साथ ही बाहर आता है। फिर यह दिन रात का चक्र चलता है, फिर वारों का, शुक्ल पक्ष - कृष्ण पक्ष का चक्र जो पितरों की आयु का हरण करता है। फिर ऋतुओं का चक्र, ज्योतिषचक्र फिर सत युग, त्रेता, द्वापर, कलियुग का चक्र यह मनु-इन्द्र की आयु को हरता है। मनु सतरूपा काल मनवन्तर कहलाता है। ब्रह्मा के एक दिन में १४ मनु समाप्त हो जाते हैं। फिर ब्रह्मा के दिन रात का चक्र यह कल्प चक्र कहलाता है। यह कल्प चक्र ब्रह्मा की १०० वर्ष की आयु समाप्त कर देता है। ब्रह्मा के अन्त होने पर फिर समय पाकर फिर ब्रह्मा का जन्म होता है। इस प्रकार संसार की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय का चक्र निरन्तर चलता ही रहता है। यह काल (समय) का महा कल्प चक्र कहलाता है। जन्म, जवानी, बुढ़ापा, मृत्यु का पुनरावर्तन ही काल चक्र है। शुभ कर्म से जीव स्वर्ग में जाते है पाप कर्म से जीव नर्क में जाते है। फिर लोट कर इसी लोक में आते हैं। यह चींटी से ब्रह्मा तक सब का पुनर्जन्म सिद्ध करता है। इस काल चक्र से कोई भी नहीं बचा हुआ है। यही बेहद के भगवान-भगवती की स्वभाव-शक्ति (योग माया) बन कर अणु-अणु में प्रकट हो कर समस्त जड़-चेतन पदार्थो, जीव-शरीरों लोको तथा परलोकों का निर्माण करती है। यह वैज्ञानिको की अन्ध शक्ति नहीं है। यह बेहद के महाकाल और महाकाली की पूर्ण ज्ञान से युक्त क्रिया शक्ति है। यह सभी जड़-चेतन पदार्थो, जीवो के स्वभाव के रूप में दिखाई देती है। जो भाव बार-बार प्रकट होता है वह स्वभाव बन जाता है। स्वभाव काल (समय) के अधीन होता है। यह स्वभाव चक्र ही काल चक्र है। यह गति जब श्वास से युक्त होती है तो श्वास गति कहलाती है। हृदय से युक्त होती हे। तब हृदय गति कहलाती हैं। इस स्वभाव से हमारा वायुमण्डल बनता है। इस वायु मण्डल से हमारी प्रकृति (शरीर) की रचना हुई है। यह स्वभाव चक्र (वासना चक्र), काल अर्थात् समय का चक्र है। इस हद और बेहद के काल चक्र को

काटने (समाप्त) करने के लिए बेहद के परम पिता परमात्मा साकार रूप में धरती पर आ चुके हैं। उन्हे आप दिव्य ज्ञान योग स्वरूप से पहिचान सकते हैं। जो कि भूतनाथ बन कर सारे संसार को स्थूल से सूक्ष्म में, सूक्षम से अतिसूक्ष्म में, और अति सूक्ष्म से निराकारी में और निराकारी से बेहद के प्रकाशित पावर पुंज अर्थात् स्वयंभु में परिवर्तन कर देंगे। यह बेहद के भगवान भगवती दिव्य विमान द्वारा दिव्य स्वरूप प्रदान कर के बेहद की मुक्ति और जीवन मुक्ति दे कर अपने दिव्य नैनो में बिठा कर इस मृत्यु लोक से बेहद के अमर लोक में ले जाने के लिए साकार में आये हुऐ हैं। आप भी आ कर बेहद के मात पिता के संकल्पों को साकर कर के विश्व कल्याण अथवा विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बन कर अपना भाग्य बना सकते हैं। आईऐ। आप का स्वागत है।

काल का विभाजन :

जैसे एक अव्यक्त आत्मा अनेक जीवात्माओं में विभाग-सा हुआ है, एक अनादि संकल्प से अनेक संकल्प बने है। एक देश के अनेक देश बने हैं, एक बेहद का महा विराट शरीर अनेक शरीरों में विभक्त हुआ है, एक इच्छा अनेक इच्छाओं में बंटी है, एक बुद्धि का अनेक बुद्धियों में विभाग हुआ है, एक मन अनेक मनों में विभक्त हुआ है। इसी प्रकार काल अर्थात् समय भी परमाणु से परम महान तक अनेक कालों (समयों) में विभक्त हुआ है। इसी प्रकार एक बेहद का महाविराट स्वरूप अनेक शरीरों में विभक्त हुआ है। वेदान्त दर्शन में भी कहा है कि परब्रह्म को भी इच्छा हुई कि मैं एक से अनेक हो जाऊँ।

परमाणु सबसे सूक्ष्म है जिसका यह अंश है उसे परम महान अर्थात् परब्रह्म कहते है। देखे :- परलोक और पुनर्जन्म :- (नया पेज नं. २५१ पुराना २३१)

सतयुग की आयु	१७,२८,०००	मानवीय वर्ष
त्रेतायुग की आयु	१२,९६,०००	मानवीय वर्ष
द्वापरयुग की आयु	८,६४,०००	मानवीय वर्ष
कलियुग की आयु	४,३२,०००	मानवीय वर्ष
१ चतुर्युग की आयु	४३,२०,०००	मानवीय वर्ष
मनुष्यों का	३६० वर्ष =	देवताओं का १ वर्ष
मनुष्यों का	१ वर्ष =	देवताओं का १ दिन
सतयुग की आयु	४,८००	देवताओं के वर्ष
त्रेतायुग की आयु	३,६००	देवताओं के वर्ष
द्वापर युग की आयु	२,४००	देवताओं के वर्ष
कलियुग की आयु	१,२००	देवताओं के वर्ष
एक चतुर्युग की आयु	१२,०००	देवताओं के वर्ष

सतयुग :

सतयुग में कल्प वृक्ष होते थे। कल्प वृक्ष के नीचे बैठकर जो इच्छा करते थे वह अपने आप मिल जाता था। कल्प वृक्ष से मद निकलता था वह खा लेते थे। पृथ्वी सतोप्रधान थी। हरियाली थी। कई मील तक पैदल चल सकते थे। क्यों कि आत्मा में सूक्ष्म शक्तियाँ थी। सत युग में ब्राह्मण होते थे। सुखी जीवन था। इन्द्र का राज्य था। सोमरस पीते थे। सुन्दर सुन्दर बाग बगीचे थे। आयु लम्बी होती थी। पृथु राजा ने ३५,००० वर्ष तक राज्य किया था। ऋषि मुनि, तपस्वी, योगी व महात्मा पुरूष तपस्या करके उपर के लोकों में जाते थे। महर्लोक में जहाँ सप्त ऋषि व महर्षि आदि निवास करते है जिनकी आयु १ कल्प होती है। और अधिक तपस्या कर के जन लोक में चले जाते थे। जहाँ पर ध्रुव है। ध्रुव ने १०,००० वर्ष तक राज्य किया था। जन लोक में सनकादि जो ब्रह्मा के मानस पुत्र हैं। ऐसे मनुष्य रहते है जिनका शरीर अपने ही तेज से प्रकाशित होता है। वे और

तपस्या करके तप लोक में जा सकते थे। जहाँ वैराज नाम के देवता दाह रहित रहते हैं जो मृत्यु से मुक्त हो जाते हैं। उनको कोई भी संताप नहीं होता। वे मुक्त जीवन में प्रसन्न चित रहते हैं।

और अधिक पुरूषार्थ करके वे सत्य लोक (ब्रह्म लोक) में चले जाते है। वहाँ उनकी अलग अलग अवस्था होती है। जहाँ वे ब्रह्मा समान होने का पुरूषार्थ करते है। वहाँ ब्रह्मा से ब्रह्म ज्ञान लेकर ब्रह्मा समान हो जाते हैं। ब्रह्म लोक से फिर विष्णु लोक में चले जाते है और अधिक पुरूषार्थ कर के शिव लोक में चले जाते हैं। शिव पुरी से और पुरूषार्थ कर के निराकारी वतन (परमधाम) में निराकार बिन्दु के रूप में बन जाते हैं। वहाँ पर भी अलग अलग स्टेज में आत्माऐं निराकारी स्वरूप में रहती है। जैसे लोमस ऋषि की आयु ब्रह्मा के १५ वर्ष के बराबर थी। १५ वर्ष = ५४०० कल्प। एक कल्प का (दिन + रात) = ८,६४,००,००,००० मानवीय वर्ष। मारकण्डे ऋषि की आयु ब्रह्मा के ७ दिन के बराबर थी। ७ दिन = ७००० चतुर्युग, १ चतुर्युग = ४३,२०,००० मानवीय वर्ष। परम धाम में निराकारी शरीर में स्थित हो जाती है। वहाँ पर भी वे अलग-अलग स्टेज में होती है। यदि वे उपर से नीचे के लोको वालों को देखना चाहे तो देख सकती है। यदि वह संकल्पों में बात चीत करना चाहें तो कर सकते हैं। लेकिन नीचे के लोकों वाले अपने से ऊँची स्टेज (वायु मण्डल) के लोकों वालों को नहीं देख सकते और ना ही वह बातचीत कर सकते हैं। यदि वे भी पुरूषार्थ करें तो उपर के लोकों में जा सकते है। यदि उपर के लोकों वाले अपनी मर्जी से नीचे के लोक वाले को उपर के लोक में बुलाना चाहें तो बुला सकते है और बातचीत कर सकते हैं। जैसे हम किसी व्यक्ति को टेलीफोन करें तो उस की मर्जी पर निर्भर है कि वह उठाए या ना उठाए। वह बात चीत करे या ना करे। ऐसे ही उपर के लोक वाले की अपनी मर्जी पर निर्भर है। उपर के लोको में भी ज्ञान के केन्द्रो के आश्रम बने हुए हैं।

इन ज्ञान केन्द्रोमें तपस्वी, मुनि, महाज्ञानि, सिद्ध गुरुओ, आदिको का वास हैं। शरीर छोडने के बाद जिन्होने मृत्यु लोक में वेदो शास्त्रो का अध्ययन किया हैं वा अध्यात्मिक विकास किया हैं। एसे व्यक्तियो को उपर के लोको के ज्ञान केन्द्र से अध्यात्मिक विकास के लिए ज्ञान मिलता हैं। वहां के लोकोमें वैचारिक क्रिया से ही ज्ञान दिया जाता हैं। वहां एक क्षणमें आत्मसात हो जाता हैं। क्यों कि ३ तत्वों वाली आत्माओं में दिव्य दृष्टि आ जाती हैं। जिन्होने यह मृत्युलोक में ब्रह्मांडो का और परमतत्वो का ज्ञान लिया हैं। जितनी अधिक लगन से यहां ज्ञान लिया हैं उपर भी वह ज्ञान जल्दी ही समझ जाते हैं। क्यों कि ३ तत्वो में दिव्य दृष्टि से ही आत्मसात हो जाता हैं। और वह उपर के लोकोमें जा कर सुखी जीवन व्यतीत करते हैं फिर सत्यलोक से विष्णु लोक में विष्णु लोक से शिव लोक में और शिव लोक से परमधाम में निराकारी स्टेज में बिन्दु रुप हो जाते हैं। वहां पर भी आत्माऐं अलग अलग स्टेज में रहती हैं। यदि वे चाहे कि जन्म लेना है तो धरती पर आ कर जन्म भी ले लेती हैं।

त्रेतायुग :

त्रेतायुग में अनेक प्रकार के फल फूल आदि अपने आप ही हो जाते है। यहाँ पर क्षत्रीय वर्ण होता है। यहाँ पर आत्मा में सूक्ष्म पावर होता है। पैदल चलते हैं। राम का जन्म त्रेता के अन्त में हुआ था। राम ने ११ हजार वर्ष तक राज्य किया था। यहाँ पर फल फूल आदि खा लेते हैं। यहाँ पर भी ऋषि मुनी तपस्वी योगी लोग तपस्या करके उपर के लोकों में जाते थे। आत्मा जब योगी बनती है तो ऊर्ध्व गति से उपर के लोकों में जाती है जब भोगी बनती है तो पाताल लोको में व नर्क में दु:ख भोगती है। वेद आदि शास्त्रों ने कहे हुए यज्ञ, दान, जप, हवन, होम, तीर्थ, वर्त समुदाय तथा अन्य साधनो से सातोंलोक साध्य है। त्रेता के अन्त और द्वापर के शुरू में राम के समय १४ प्रकार का अनाज धान जवार आदि धरती में डाल देते थे वह

स्वयं ही पैदा हो जाता था। सुखी जीवन था। राम विष्णु के अवतार थे।

द्वापर युग :

द्वापर युग में महेनत करके अन्न उत्पन्न करते हैं। यहाँ पर वैश्य वर्ण होता है। यहाँ पर खेती करनी पड़ती थी। हल चलाते थे। तब अनाज उत्पन्न होता था लेकिन फिर भी सुखी जीवन था। द्वापर के अन्त में कृष्ण का जन्म हुआ था। राम और कृष्ण विष्णु के अवतार थे। कृष्ण और राम के जन्म में ८ लाख ६९ हजार वर्ष का अन्तर था।

सभी धर्म पिता, धर्म गुरू निराकार को मानते है। फरिश्ता स्वरूप को मानते है। वे सभी अपने अपने धर्मों की स्थापना तीन तत्त्वों वाली आत्माओ द्वारा करवा रहे है। महात्मा बुद्ध ने अहिंसा परमो धर्म का ज्ञान दिया। मुस्लिम लोग भी आदम हव्वा को मानते हैं और फरिश्तों को मानते है। खुदा अथवा नूर को मानते हैं।

जीसस क्राईस्ट ने कहा कि मैं परमात्मा का पैगम्बर हुँ। परमात्मा एक ज्योति है। वे भी निराकार को मानते हैं और फरिश्तों को मानते है। (I am the messenger of God and God is light.)

शंकराचार्य भी निराकार को मानते है।

मुहम्मद ने कहा कि कयामत के दिन में अल्ला ताला नूर स्वरूप से आकर कब्र में से निकाल कर ले जाएगा या तो फरिश्ता बनाएगा या शैतान बनाएगा। अभी कयामत का दिन चल रहा है और कब्र में से निकल कर आ रहे हैं। वे भी निराकार को और फरिश्ता स्वरूप को और जन्नत को मानते है।

इब्राहिम ने भी कहा कि आदम को खुदा मत कहो आदम खुदा नहीं लेकिन आदम खुदा के नूर से जुदा नही। वे भी निराकार को मानते हैं और देवी-देवता (फरिश्तों) को भी मानते हैं।

गुरूनानक देव ने एवं अन्य गुरूओं ने भी काल का चिन्तन किया था। अकाल तख्त स्थापित हुआ वे अकाल पुरुष को मानते हैं।

स्वामी नारायण ने भी स्वामी नारायण सम्प्रदाय की स्थापना की।

ये सभी उपर में तीन तत्त्वों में हैं वे सभी अपने अपने धर्मों की स्थापना उपर से करके अपनी अपनी वंशावली (डिनाईस्टी) को बढ़ा रहे हैं।

इन सभी का जन्म हमारा ब्रह्माण्ड में हुआ है वे सभी जहाँ से आई हैं उसी लोक तक जा कर फिर अपने अपने रचियता में समा कर इस ब्रह्माण्ड के परम धाम तक जाएँगे।

कलियुग :

कलियुग में बहुत मेहनत कर के कमाई करनी पड़ती थी। कलियुग में शूद्र वर्ण था। लेकिन इतना दुख नहीं था जितना कि अब अति में है। शूद्रों का राज्य था। ब्राह्मण शूद्रों जैसा कर्म करते है और शूद्र ब्राह्मण जैसा कर्म करते थे। पापाचार होता था। विष्णु के २४ अवतार होते रहते है। युगे-युगे विष्णु के अवतार होते रहते हैं। लेकिन सृष्टि के परिवर्तन का उनको ज्ञान नहीं होता है।

सभी धर्मपिता धर्म गुरु आदि निराकार को मानते है। व फरिश्ता स्वरूप को मानते है।

शंकराचार्य भी निराकार को ही मानते थे।

गौतम बुद्ध ने भी अहिंसा परमो धर्म का ज्ञान दिया।

५. प्रलय - महा प्रलय

(१) नित्य प्रलय :

नित्य प्रलय हंमेशा सूक्ष्म में होता ही रहता है। निद्रा अवस्था भी एक प्रकार का प्रलय ही है। जन्म और मृत्यु यह भी प्राणियों का प्रलय ही है। संकल्पों में गिरना यह भी प्रलय ही है।

(२) आंशिक प्रलय वा अर्ध प्रलय :

यह प्रलय प्रत्येक चतुर्युग होने पर होती है। अर्ध प्रलय होने पर धरती पर पानी फिर जाता है। लोग पहाड़ों पर चढ़ जाते है। सिद्ध पुरुषों को पहले से ही अनुमान हो जाता है वे ऋषि मुनी ऊपर के लोकों में जाते रहते हैं। ४ युग पूर्ण होते थे तो मुसलाधार बारिश होती थी धरती पर पानी फिर जाता था तो विष्णु के अवतार होते हैं।

(३) मनवन्तर प्रलय :

प्रत्येक चतुर्युग बीतने पर जब अर्ध प्रलय होता रहता हैं। धरती पर पानी फिरता रहता हैं। विष्णु के अवतार होते रहते हैं। जब $\frac{६}{}$ = ७१.४२ बार प्रत्येक चतुर्युग बीतने पर अर्ध प्रलय होता रहता है तब जल प्रलय हो जाता है। पृथ्वी सारी जलमय हो जाती हैं। मनुशतरूपा का आयु पूरा हो जाता है। इसको १ मनवन्तर कहते हैं। धरती जल मय हो जाती है तब विष्णु का अवतार होता है। मनु - इन्द्र - देवगण - सप्तर्षि और मनु आदि बीजों को बचा कर मत्सय अवतार में नाव में बिठा कर ले जाते हैं। एक एक मनवन्तर बीतने के साथ इन्द्र, ऋषि, देवर्षि, देवता, पितृगण का परिवर्तन हो जाता है। - परलोक पुनजन्म (पेज नं. २३९ नई पेज नं. २१९ पुरानी)

मनुसतरूपा का आयुष्काल = ७१.४२ चतुर्युग

एक चतुर्युग × ७१.४२ = एक मनवन्तर = एक मनु सतरूपा का आयुष्काल

४३,२०,००० × ७१.४२ = ३०,८५,३४,४०० वर्ष = एक मनवन्तर

तब विष्णु ब्रह्मा द्वारा दूसरे सप्त ऋषि को रचवाते है। फिर दूसरा सप्त ऋषि फिर दूसरा मनु सतरूपा की रचना करते है। मनु सतरूपा प्रजापति को रचते है। प्रजापति देवी देवताओ को रचते हैं। इसी प्रकार वंश बढ़ता है। मनु ४ वर्ण बनाते हैं। ब्रह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यो, शुद्रों को उनके कर्मो के अनुसार वर्ण दिए जाते है। मार्कन्डे पुरान के अनुसार काल राज मनु के साथ देवता, ऋषि, पितृगण तथा इन्द्र आदि समस्त पदाधिकारी बदल जाते हैं। चतुर्युग बीतने पर विष्णु के अवतार होते रहते हैं। इसी प्रकार एक-एक कर के १४ मनु-सतरूपा का आयुष्काल पूरा हो जाता है। १४ मनवन्तर बीत जाते है। एक एक मनवन्तर के बाद प्रलय होता रहता है।

(४) कल्प प्रलय व नैमत्तिक प्रलय या ब्रह्म प्रलय :

१००० चतुर्युग का ब्रह्मा का एक दिन होता है। यह एक कल्प कहलाता है। १००० चतुर्युग में १४ मनुसतरूपा का आयुष्काल पूरा होता है। व १४ मनवन्तर बीतने पर ब्रह्मा का एक दिन बीतता है।

एक हजार चतुर्युग = ब्रह्मा का एक दिन या ब्रह्मा का एक कल्प कहलाता है।

१४ मनवन्तर = १४ मनु का आयुष्काल = ब्रह्मा का १ दिन या ब्रह्मा का १ कल्प

४३,२०,००० × १००० = ४,३२,००,००,००० = ब्रह्मा का १ कल्प

१४ मनुसतरूपा का अयुष्काल = चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष है।

ब्रह्मा का १ दिन बीतने पर धरती क्षीण (कमजोर) हो जाती है उस समय १०० वर्षों तक घोर अन्नावृष्टि होती है वर्षा होनी बन्द हो जाती है। अकाल पड़ता है। १०० वर्ष तक वर्षा नहीं होती कमजोर शक्ति वाले पापी

भूख प्यास से दुखी हो कर नष्ट हो जाते हैं। तब विष्णु संसार का विनाश करने के लिए सम्पूर्ण प्रजा को अपने में लीन करने का यत्न करते है। तब विष्णु सूर्य की १२ किरणों में स्थित हो कर धरती के सम्पूर्ण जल को सुखा देते है। धरती खुष्क हो जाती है। १२ सूर्यो की गर्मी समुद्र, नदियों, पर्वतीय सरिताओं, सरोवरों आदि के जलों को सुखा देते है। तथा पातालों का जल भी सुखा देते है। विष्णु के प्रभाव से १२ सूर्यो की १२ रशमीयाँ हो जाती है। यह तीनों लोक (भूलोक, भुवर्लोक और स्वर्ग लोक) भस्म हो कर नष्ट हो जाते हैं। पृथ्वी कछुए की पीठ की तरह दिखाई देती है। वृक्ष आदि जल जाते है फिर शिव रूद्र रूप धारण करके कालाग्नि बरसाते है। सम्पूर्ण चराचर के नष्ट होने पर यह आग की लपटें चारों और फैलकर सातों पाताल को जला कर अग्नि चारों और चक्कर लगाने लगती है। त्रिलोकी जलकर नष्ट हो जाती है। एक कड़ाह के समान हो जाती है। पृथ्वी कछुए की पीठ के समान हो जाती है जंगल, पेड, पोधे, वृक्ष आदि जल कर राख हो जाते हैं। फिर आग की बड़ी और तेज लपटे भूमि पर पहुँच कर भूमि को भी भस्म कर देती है। त्रिलोकी जलते हुए कड़ाह की तरह लगती है। तब ताप के कारण कहीं रहने का स्थान न होने के कारण। ऐसी अवस्था होने पर परलोक की इच्छा करने वाले मानव लोग महर्लोक में चले जाते हैं। जहाँ पर सप्त ऋषि गण आदि का निवास हैं। उस महान ताप जो कि महर्लोक तक पहुँच जाता हैं। महर्लोक से हट कर ऋषि, मुनि, सन्त, महात्मा, महर्षि गण, सप्तर्षिगण, साधु जन लोक में चले जाते हैं। जन लोक में सनकादि का निवास है। और ध्रुव आदि का निवास हैं। यह लोक अपने ही तेज अर्थात् ध्रुव सनकादि ब्रह्म ऋषियों के स्वयं के तेज से प्रकाशित है। फिर जन लोक से तप लोक में चले जाते है जहाँ पर संताप रहित रहते हैं। वहाँ पर मृत्यु नहीं होती। प्रसन्न चित रहते है। फिर तप लोक से सत्य लोक (ब्रह्म लोक) में चले जाते हैं वहाँ उनकी अलग अलग अवस्था

(स्टेज) होती है। वे ब्रह्मा से ब्रह्म ज्ञान लेकर ब्रह्मा समान होकर विष्णु पुरी में, विष्णु पुरी से शिव पुरी में फिर शिव पुरी से परमधाम में निराकारी हो जाती है बिन्दु, बिन्दु बन जाती है। वहाँ पर भी अलग अलग स्टेज में आत्माएँ होती हैं। तब सम्पूर्ण जगत को नष्ट करने के लिए रूद्र रूप धारी अपने स्वास से मेघो (बादलों) को उत्पन्न करते है। बादल बिजली की गड़गड़ाहट कर के घोर गर्जना करते हैं। बादल मुसलाधार पानी बरसाते है। बादल १०० वर्ष तक जल बरसाते रहते है। बारिश सारी अग्नि को बुझा देती है। सारी पृथ्वी जलमय हो कर एक महा सागर बन जाती है। त्रिलोकी या पाताल आदि नष्ट हो जाते हैं। सभी जड़ चेतन का विनाश हो जाता है। सम्पूर्ण धरती को जलमय करके सारा महा सागर त्रिलोकी से उपर सारा सागर बन जाता है। १०० वर्षों तक बारिश होती रहती है। अन्धकार फैल जाता है। सारा जल सप्त ऋषियों के स्थान तक पहुँच जाता है। अग्नि की सूक्ष्म तनमात्राएँ भी खत्म हो जाती है। तब विष्णु बादलों को खत्म करने के लिए अपने स्वास से वायु को छोड़ देते हैं। वायु बादलों को बिखेर देती है। वायु १०० वर्षों तक चलती रहती है। सूक्ष्म जल भी खत्म हो जाता है, शुद्ध वायु ही आकाश में रह जाता है। फिर विष्णु सारी वायु को पी कर जल में शेषनाग की शय्या पर सो जाते है। वे योगनिद्रा में अपने स्वरूप का चिन्तन करते है। सूक्ष्म वायु भी समाप्त हो जाता है केवल शुद्ध आकाश ही रह जाता है। जन लोक के कुछ बचे हुए सनकादि सिद्ध विष्णु की स्तुति करते है। ब्रह्म लोक वासी भी विष्णु का चिन्तन करते है। विष्णु कल्प का प्रलय करते है उस समय ब्रह्मा की रात्री हो जाती है। इस कल्प प्रलय के लिए विष्णु निमित बनते है। इसलिए इसे नैमित्तिक प्रलय भी कहते है। यह ब्रह्मा की रात्री अर्थात् विष्णु की भी रात्री होती है। जितना ब्रह्मा का दिन है उनती ही ब्रह्मा की रात्री है। उस समय सारा संसार विष्णु में विलीन हो जाता है।

ब्रह्मा का १००० चतुर्युग का दिन है।

इतनी ही बडी ब्रह्मा की रात्री होती है।

ब्रह्मा का दिन/कल्प = ४,३२,००,००,००० यह ब्रह्मा का एक दिन या कल्प भी कहलाता है

= ४ अरब ३२ करोड मानवीय वर्ष

इतनी ही ब्रह्मा की रात्री है = ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष

ब्रह्मा के दिन और रात को ब्रह्मा का अहोरात्र कहते है = ८ अरब ६४ करोड़ वर्ष

ब्रह्मा का १ सैकिण्ड ÷ $\frac{\text{ब्रह्मा का १ अहोरात्र की आयु का समय}}{\text{ब्रह्मा का (१ दिन + रात = २४ घन्टे)}}$

÷ $\frac{८,६४,००,००,०००}{\text{२४ x ६० x ६० (२४ घन्टे के सैकिन्ड बनाने पर)}}$

÷ $\frac{८,६४,००,००,००० \text{ वर्ष}}{८६,४०० \text{ सैकिन्ड}}$ = १ लाख वर्ष

ब्रह्मा का १ सैकिन्ड = १ लाख वर्ष के बराबर है।

(जब हद का ब्रह्मा १ सैकिन्ड ऊपर में खींच कर १ सैकिन्ड का साक्ष्ताकार करवा देता है तो उसकी आयु १ लाख वर्ष बढ़ जाती है।)

(लेकिन यह जो बेहद के मात-पिता के उपर यदि हमें १००% निश्चय हो जाता है तो उनकी एक सैकिन्ड भी दृष्टि पड जाती है तो वे जीवन-मुक्ति देकर अमर बना कर दिव्य लोक में ले जाते हैं)

विष्णु जब जागते है। तो उसी प्रकार ब्रह्मा से सृष्टि रचवाते हैं जैसे उन्होंने पहलें ब्रह्मा द्वारा रचवाई थी।

ब्रह्मा का एक मास = ८,६४,००,००,००० × ३० दिन

= २,५९,२०,००,००,०००

= २ खरब ५९ अरब २० करोड वर्ष

ब्रह्मा का एक वर्ष = २,५९,२०,००,००,००० × १२ मास

= ३१,१०,४०,००,००,०००

ब्रह्मा के १ वर्ष का समय = ३१ खरब १० अरब ४० करोड़ वर्ष

ब्रह्मा का १ परार्ध = ब्रह्मा का ५० वर्ष

= ३१,१०,४०,००,००,००० × ५०

ब्रह्मा का १ परार्ध काल = १५,५५,२०,००,००,००,०००

= १५ नील ५५ खरब २० अरब वर्ष

ब्रह्मा के ५० वर्ष को एक परार्ध काल का समय कहते हैं। ब्रह्मा की आयु का १०० वर्ष का समय २ परार्ध कहलाता है। इस को पर भी कहते है। ब्रह्मा के १०० वर्ष के समय को महा कल्प भी कहते हैं।

ब्रह्मा का १०० वर्ष का समय = ब्रह्मा का १ वर्ष × १०० वर्ष

= ३६० दिन × १०० वर्ष

= ३६,००० दिन (कल्प)

ब्रह्मा का १ वर्ष = ३१ खरब १० अरब ४० करोड़ वर्ष

ब्रह्मा का १०० वर्ष = ३१,१०,४०,००,००,००० × १००

= ३१,१०,४०,००,००,००,०००

२ परार्ध का समय (१०० वर्ष) = ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष

२ परार्ध काल के समयको पर भी कहा जाता है।

ब्रह्मा का पहला परार्ध बीत चुका है। दूसरे परार्ध का पहला दिन चल रहा है।

ब्रह्मा की आयु के इस समय १५,५५,२१,९७,२९,४९,०७४ मानवीय वर्ष बीत चुके हैं।

इस में से १ परार्ध का समय घटाने पर

१५,५५,२१,९७,२९,४९,०७४
१५,५५,२०,००,००,००,०००
१,९७,२९,४९,०७४

अभी दूसरे परार्ध के पहले दिन का १,९७,२९,४९,०७४ वर्ष बीत चुके हैं। (उपर के समय के मनवन्तर बनाने के लिए उसको नीचे एक मनु की आयु पर भाग किया है।)

१,९७,२४,४९,०७४ ÷ ३०,८५,३४,४०० वर्ष (एक मनवन्तर का समय व एक मनु की आयु)

एक मनु की आयु पर भाग करने पर

= ६ मनवन्तर और १२,२७,४२,६७४ वर्ष का समय बीत चुका है।

छः मनवन्तर बीत चुके है, सातवें मनवन्तर के भी १२,२७,४२,६७४ वर्ष बीत चुके है। (उपर सातवें मनवन्तर के बीते हुए समय के चतुर्युग बनाने के लिए नीचे उसको एक चतुर्युग पर भाग किया है।)

६ मनवन्तर और १२,२७,४२,६७४ ÷ ४३,२०,००० चतुर्युग पर भाग करने पर = २८ चतुर्युग और ७,८२,६७४ वर्ष बीत चुके है। यानि की सातवाँ मनवन्तर चल रहा हैं।

इस के बाद ना ही कोई मनु और ना ही कोई ब्रह्मा आएगा। यह आखिरी ब्रह्मा का समय चल रहा है।

यह आखिरी ब्रह्मा के मनु के ६ मनवन्तर २८ चतुर्युग और ७ लाख ८२ हजार ६७४ वर्ष बीत चुकने के बाद अभी बेहद के मात पिता साकार में सारे विश्व को व्यक्त से अव्यक्त बना कर वापिस बेहद के परमधाम में ले जाने के लिए आए है।

यह ब्रह्मा के २ परार्ध वाला समय ब्रह्मा की आयु का अन्त करता है। यह २ परार्ध काल का समय विष्णु पर साशन नही करता। इस प्रकार काल परमाणु से ले कर 'ब्रह्मा' तक का विभाजन है।

यह क्षर [अर्थात् जिसका क्षय (विनाश) होता है] ब्रह्मा का विभाजन

है। यह समय का व्यक्त रूप है। इस से परे बेहद का अक्षर ब्रह्म है (जिसका विनाश नहीं होता) है। यही सब कारणों का कारण बेहद का अक्षर ब्रह्म है।

ब्रह्मा तक के जितने भी लोक हैं वे विनाशी हैं। यह ब्रह्मा की आयु को क्षीण करते हैं।

लोमस ऋषि की आयु ब्रह्मा के १५ वर्ष के बराबर थी। १५ वर्ष के ५,४०० दिन बनते हैं।

लोमस ऋषि की आयु ५,४०० कल्पों के बराबर थी।

ब्रह्मा का (दिन + रात) १ अहोरात्र = (८,६४,००,००,००० वर्ष है। ब्रह्मा को १ कल्प (अहोरात्र) = ८,६४,००,००,००० वर्ष।

माकन्डे ऋषि की आयु ब्रह्मा के ७ दिन के बराबर थी ब्रह्म का (१ दिन+रात) = ८,६४,००,००,००० वर्ष हैं।

माकण्डे ऋषि की आयु = ८,६४,००,००,००० x ७
= ६०,४८,००,००,००० वर्ष

ब्रह्म लोक के वासी ब्रह्मा के साथ ही निर्वाण को पाते हैं। इससे परे बेहद का अक्षर ब्रह्म है (अक्षर अर्थात् जिसका विनाश नहीं होता) अक्षर तत्त्व ३ प्रकार का है।) यह नीचे वाले तीनो ही स्वरूप अविनाशी है।

एक सगुण ब्रह्म = अर्थात् बेहद के बाप का साकारी स्वरूप

दूसरा ज्योर्ति ब्रह्म = अर्थात् बेहद के बाप का आकारी स्वरूप

तीसरा निर्गुण ब्रह्म = अर्थात् बेहद के बाप का निराकारी स्वरूप

अक्षर ब्रह्म को पुरुषोत्तम तत्त्व भी कहते है। यह परम धाम के ३ स्वरूप है। यह एक ही बेहद का पुरूषोत्तम तत्त्व हैं जो तीनों को धारण करता है। यह बेहद का पुरूषोत्तम तत्व अविनाशी है।

बेहद के परम पिता के बेहद के पुरुषोत्तम तत्व के ३ भाग हैं।

सगुण ब्रह्म = १/३ भाग

ज्योर्ति ब्रह्म = १/३ भाग कुल = १/३+१/३+१/३=१
निर्गुण ब्रह्म = १/३ भाग यही बेहद के महा शिव हैं।
मनुष्यों का १ वर्ष = देवताओं का एक दिन
देवताओं का १ वर्ष = सप्तऋषिओं का १ दिन
ध्रुव का १ दिन = सप्तऋषियों का १ वर्ष
सप्त ऋषि का १ दिन = महर्षि का १ साल
= महर्लोक का १ साल
मनुष्यो का १ वर्ष = देवताओ का १ दिन
देवताओं का १ वर्ष = मनुष्यों के ३६० वर्ष
यहाँ का १ साल = इन्द्र पुरी का १ युग
यहाँ का १ दिन = इन्द्र पुरी का १ साल
यहाँ का १ मास = चन्द्रलोक का १ दिन
यहाँ का १ साल = चन्द्र का १ मास
ब्रह्मा का १ सैकिन्ड = यहाँ का १ लाख वर्ष
ब्रह्मा का १ महा कल्प = महा विष्णु का १ पल (१ सैकिन्ड)
ब्रह्मा का १ महा कल्प = ३६,००० कल्प
ब्रह्मा के २ परार्ध = ब्रह्मा के १०० वर्ष
(ब्रह्मा के २ परार्ध काल को पर भी कहते है)

(५) महा प्रलय या प्राकृत प्रलय ब्रह्मा के २ परार्ध काल या ब्रह्मा के १०० वर्ष का प्रलय या महा कल्प प्रलय

जब प्रत्येक ब्रह्मा के दिन (कल्प) में १४ मनु का आयुष्काल पुरा होता हैं। तब एसे ब्रह्मा के अहोरात्र बीतते जाते हैं। जब ब्रह्मा के ३६,००० वे कल्प के १४ वें मनु का समय पुरा होने को होता हैं। तब महा कल्प के अन्त होने का समय आ जाता हैं। तब ब्रह्मा की १०० साल की आयु पूरी

होने को होती हैं। अब शिव देखता हैं कि ब्रह्माण्ड में पावर नहीं रही हैं। जब महा शिवने शिव से संकल्पो में कह कर यह ब्रह्माण्ड बनवाया था तब शिव शिवत्व था, शिवमें पौजिटिव पावर था। इस पौजिटीव पावर से ब्रह्माण्ड बनवाया था। धीरे धीरे करके ब्रह्मा के दिन बीतते गए। तब ब्रह्माण्डमें भी पावर क्षीण होती गई। तब शिव अपनी पावर को इकठा करने के लिए ब्रह्माण्ड की पावर को वापिस अपने मे विलीन करना चाहता हैं। तब वह रुद्र रुप धारण करके उपर से कालाग्नि बरसाता हैं उस समय वह महा कल्प का महा प्रलय करता हैं। वायु से समस्त पाँचो भूतों का अव्यक्त प्रकृति में वीलीन होना महाप्रलय कहलाता है। जब अकाल, अग्नि, जल, वायु आदि से पृथ्वी सहित सारे पाताल, सारे लोक, सभी प्राणी नष्ट हो जाते हैं उस समय महाप्रलय का समय आ जाता है। उस समय सम्पूर्ण लोक तथा सारा पाताल नष्ट हो जाता है। उस समय विष्णु की इच्छा से महा कल्प प्रलय का अवसर होने पर महत्तत्व से लेकर सभी विकारो का क्षय (विनाश) हो जाता है।

पहले भूमि को और उसकी गन्ध को जल अपने में विलीन कर लेता है। गन्ध का लय होने पर धरती का लय हो जाता है। पृथ्वी का लय होने पर सूक्ष्म गन्ध भी पानी में विलीन हो जाता है जब सारा ही महा सागर बन जाता है जल बड़े वेग से घोर शब्द करते हुए बढ़ने लगता है। जल सारे जगत में व्याप्त हो जाता है। कही स्थिर रहता है कही वेग से बढ़ता रहता है। तब कालाग्नि रुद्र रुप धारी शिव कालाग्नि बरसाता हैं। तब जल के गुण रस अग्नि (तेज) में विलीन हो जाता है। सूक्ष्म जल को भी अग्नि सुखा देती है। जब जल अग्नि द्वारा सूख जाता है तो सारे जगत में उपर-नीचे, इधर-उधर अग्नि की ज्वालाएं फैल जाती है। तब तेज (अग्नि) वायु में विलीन हो जाती है। अग्नि रूपहीन हो कर उस का सूक्ष्म अंश भी खत्म हो

जाता है। फिर वायु जोर से बहने लगता है। वायु उपर नीचे, अगल-बगल दसों दिशाओं में तेजी से बहने लगता है। अग्नि को वायु पी लेता हैं। अग्नि का सूक्ष्म रुप भी वायुमें विलीन हो जाता हैं। अग्नि तत्व शान्त हो जाता हैं। जगतमें प्रकाश नहीं रहता। वायु के गुण को आकाश पी लेता है। शुद्ध आकाश ही रह जाता है। और शब्द आकाश का गुण रहता है, सूक्ष्म वायु भी खत्म हो जाता है। वह रूप, रस, स्पर्श, गन्ध तथा आकार से रहित परम महान आकाश ही रहता है। अग्नि तब वायु में विलीन हो जाती है, सूक्ष्म अग्नि भी समाप्त हो जाती है। फिर वायु तेज गति से चलने लगती है। सभी दसो दिशाओं में आकाश फैल जाता है। वायु को आकाश पी लेता है। शुद्ध आकाश ही रह जाता है। सूक्ष्म वायु भी समाप्त हो जाता है। आकाश अहंकार तत्त्व में विलीन हो जाता हैं। अहंकार तत्व महत्तत्व में विलीन हो जाता हैं और महत्तत्व को मूल प्रकृति अपने में विलीन कर लेती है। जो कि अव्यक्त प्रकृति बन जाती है। प्रकृति का व्यक्त स्वरूप अव्यक्त स्वरूप में विलीन हो जाता है। पुरूष अर्थात् जो सभी की अन्तरआत्मा है। वह प्रकृति को अपने में विलीन कर लेते है। पुरुष और प्रकृति एक हो जाते है। चित्र नं. १० देखे :- महा भारतमें लिखा हैं कि जब गरुड इन्द्र लोकमें अमृत लेने के लिए गए तब उन्हे एक-एक तत्व का आवरण पार करना पडा। अर्थात जिस लोकमें हैं तो पांचो तत्व किन्तु भू-तत्व की विशेषता हैं उसका नाम भूलोक पडा। इसके उपर वाले घेरे में हैं तो ४ तत्व लेकिन वहां जल तत्व की विशेषता हैं। इस से पहेले एक मोटे कुहरे (बादल जैसा) का घेरा पार करना पडता हैं। फिर ३ तत्व वाला आवरण हैं। उस में अग्नि तत्व की विशेषता हैं। फिर २ तत्व वाला घेरा आता हैं उस में वायु तत्व की विशेषता हैं। फिर शुद्ध आकाश तत्व का घेरा हैं। इस में दूसरा कोई तत्व नहीं रहता इस घेरे के बाद अहंकार का आवरण हैं और फिर ज्ञान का

आवरण हैं। (देखे चित्र नं. १०):- इस चित्र में उपर परमधाम हैं। परमधाम को छोडकर जितने भी लोक हैं वहां पर पहुंचे हुए प्राणियों को पुन्य भोग लेने के पश्चात पुन्य क्षीण हो जाने पर इसी मृत्यु लोक में लोटना पडता हैं। क्योंकि यह सभी लोक किसी ना किसी तत्व वाले घेरेमें ही रहते हैं इन लोको में जो देह की प्राप्ति होती हैं, उसमे भी वही तत्व विशेष रहता है। इस लिए उसमे पुन्य भोगने की क्षमता रहती है इस लिए हमे बेहद के मात-पिता को पहिचान कर उन पर पूर्ण निश्चयात्मक होकर उन से दिव्य ज्ञान योग स्वरुप सीख कर इन ५ तत्वो से पार, सूर्य चान्द सितारो से भी पार पूरा १५० अरब प्रकाश वर्ष से भी पार ८.४ कला जो कि पृथ्वी से ६११४४०० अरब प्रकाश वर्ष दूर हैं। वहां पर अपना ऐसा ही ५ तत्वो के शरीर को स्मृति में लाना हैं। एसे ही कपडे हैं ऐसा ही शरीर है लेकिन वह गोल्डन लाईट का है। उस में से चारो और लाईट निकल रही हैं। आत्मा और शरीर दोनो लाईट के हैं। यहाँ पर भी अपनी आत्मा और शरीर को लाईट के रुप में देखना हैं । अपने शरीर को गोल्डन लाईट के कार्ब में देखना हैं। उपर में अपने दिव्य अलौकिक स्वरुप को देखते - देखते उस में समा जाना हैं। इस अवस्था में विश्व कल्याणार्थ यह संकल्प प्रसारित करे कि इस सृष्टि के आसपास जो भी प्राणी हैं, मानव आत्माऐं हैं, पशु-पक्षी, जीव, जन्तु, वनस्पति जो कुछ भी हैं उन सब का सदा के लिए कल्याण हो। सब का सदा के लिए मंगल हो, सब का सदा के लिए भला हो। सब को सुख शान्ति मिले। सब आपस में प्रेम और स्नेह से रहने लगे ऐसे संकल्प करते करते नि:संकल्प बन जाना हैं। ताकि हमारा संकल्प अगिणित बार सारी सृष्टि में प्रसारित होने लगे। इस प्रकार जो गुण बेहद के बाप में हैं वही गुण शक्तियां बच्चोमें भी स्थानान्तरित हो जाएंगे। तब साधारण मनुष्य आत्मा ज्ञानी वा योगी बन कर मनुष्य से देवता बन जाऐंगे। बेहद के

परमपिता बेहद के महाकाल दिव्य विमानसे दिव्य स्वरुप प्रदान कर के ले जाने के लिए आए हैं। अब चित्र नं. १० देखे :- इस चित्र में पहले एक १४ भुवन का एक छोटा सा ब्रह्माण्ड दिखाया गया है। इसमें ७ लोक धरती के उपर के हैं और ७ पाताल लोक नीचे है। उपर और नीचे वाले लोकों का साईज दिया हुआ है। यह ब्रह्माण्ड ६० करोड़ योजन ऊँचा और ५० करोड़ योजन विस्तारवाला है। यह एक अण्डे की शेप (आकार) जैसा है। इस १४ भुवनों के उपर सबसे पहले पृथ्वी तत्त्व का एक करोड़ योजन का घेरा है। इसके उपर मोटा कुहरे (बादल जैसा) का घेरा है। फिर १० करोड़ योजन का जल तत्त्व का घेरा आता है। इसके ऊपर १०० करोड (एक अरब) योजन का अग्नि तत्त्व का घेरा है। उसके उपर एक हजार (१० अरब) करोड योजन का वायु तत्त्व का घेरा है। उसके उपर १०,००० करोड (एक खरब) योजन का आकाश तत्त्व का घेरा है। उसके उपर १,००,००० करोड़ (१० खरब) का अहंकार तत्त्व का घेरा है। (पेज नं. १४० - सकन्ध पुरान) → सातवाँ आवरण अव्यक्त प्रकृति का है उसे अनन्त कहा गया है उसके भीतर ऐसे करोड़ो और अरबों ब्रह्माण्ड स्थित है। जो सभी अपनी अपनी धुरी पर घूम रहे हैं। वे ऐसे ही है जैसे यह ब्रह्माण्ड बताया गया है। अव्यक्त प्रकृति का आवरण असंख्य योजन का है। यह बड़ा घेरा है। यहाँ प्रकृति पुरूष (आत्मा) में विलीन हो जाती है। जैसे तिल में तेल होता है ऐसे ही पुरूष और प्रकृति एक हो जाते हैं। पुरूष और प्रकृति का अलग होना ही दुःख का कारण है।

→ प्रकृति के अन्तर्गत समस्त लोक काल रूप अग्नि द्वारा (प्रलय काल में) जला दिए जाते हैं। परलोक और पुनर्जन्म → (पुरानी पेज नं. ३३९ नई पेज नं. ४०७) → इस अव्यक्त प्रकृति में अन्तानन्त कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड घूमते रहते हैं।

इस अव्यक्त प्रकृति के उपर विरजा नदी है। इसके उपर वाले घेरे में पहले ब्रह्मा है फिर इसी घेरे में ऊपर महा ब्रह्मा है फिर ऊपर वाले घेरे में पहले विष्णु है उसके ऊपर महा विष्णु है। इसके ऊपर वाले घेरे में पहले शिव है फिर उसके उपर महा शिव है। जिस सूर्य मण्डल में धरती पर हम रहते है इस मृत्यु लोक में सूर्य की किरणे धरती पर आती है उतनी ही दूरी पर ऊर्ध्व की और जाती है। इस सूर्य की किरणें जहाँ समाप्त हो जाती है। वहाँ से इस सूर्य से भी हजार गुने बड़े सूर्य का मण्डल शुरू होता है। उस सौर मण्डल का ऊपरी घेरा जहाँ पर समाप्त होता है इसके बाद प्रकृति के सभी सप्त आवरण समाप्त हो जाते हैं वहाँ से परमधाम की सीमा शुरू होती है। इसी परम धाम के विषय में भौतिक मन बुद्धि द्वारा कुछ भी विचार करना असम्भव माना गया है। श्री गर्ग संहिता में लिखा है। जहाँ पर संसार का सब से बड़ा सुख समाप्त होता है वहाँ से परम धाम के सब से बड़े दुख की सीमा शुरू होती है। जहाँ से संकल्प चलने से कारण शरीर की उत्पत्ती होती है और वायु तत्व उत्पन्न होता हे। वहीं से दुख अर्थात भोगी शरीर होता है। वहाँ बेहद के परम धाममें महाकाल (महाशिव) 'दिव्य विमान' से 'दिव्य स्वरूप' दे कर ले जाते हैं। नैनो रुपी दिव्य विमान में लेने के लिए आए हैं।

(६) अत्यान्तिक प्रलय (या मोक्ष) :

ज्ञान हो जाने पर जब आत्मा परमात्मा के स्वरूप में स्थित होता है। आत्मा स्थूल ५ तत्वो के शरीर से पुरूषार्थ कर के सूक्ष्म शरीर धारण करती है। आत्मा तीन तत्वों का शरीर (आकाश, वायु, अग्नि) धारण कर लेती है। फिर तीन तत्वों के शरीर से पुरूषार्थ कर के कारण शरीर परम तत्वो के शरीर को धारण करती है। कारण शरीर मन बुद्धि का होता है। कारण शरीर सतो प्रधान शरीर होने के कारण उसमें गोल्डन चेतन शक्ति होती है। अपने

कारण शरीर को और तेजोमय बना कर महा कारण शरीर (कैवल्य) अर्थात् मोक्ष प्राप्त कर लेती है। मनुष्य को अपने आप से वेराग्य हो जाता है। उस का नाम अत्यन्तिक प्रलय है। इसे मोक्ष भी कहते है।

ब्रह्माण्ड का वर्णन :

एक-एक महा ब्रह्माण्ड में अरबो-खरबों ब्रह्माण्ड घूम रहे है। एक-एक ब्रह्माण्ड के मालिक एक एक शिव है। ऐसे अरबों, खरबों शिव है। जिस भारत वर्ष में हम रहते हैं यह हमारा ब्रह्माण्ड बेहद के परमधाम का सैन्टर है।

शिव निराकारी भी है आकारी भी है। शिव एक तत्व है।

शिव काल तत्त्व भी है। शिव शिवत्व भी है। इस का जन्म परम तत्त्वों में होता है इसलिए इसे परमात्मा कहते हैं। शिव कालाग्नि रुप धारी भी है।

महा शिव, शिव से ब्रह्माण्ड बनाने के लिए संकल्पों में कहते है। तब शिव आकारी बन कर शक्ति (अम्बिका) की रचना करते है फिर शिव शक्ति विष्णु को रचते है फिर विष्णु की नाभी से कमल निकलता है। शिव द्वारा कमल से ब्रह्मा का जन्म होता है। ब्रह्मा सप्त ऋषि को पैदा करते है। सप्त ऋषि मनु सतरूपा को मनु सतरूपा प्रजापति को रचते हैं। प्रजा पति देवी देवताओं को रचते हैं। देवी-देवताओं से सृष्टी बढती है। देवी देवताओं से पुत्र-पुत्रियो का जन्म होता है। फिर उनके भी पुत्र पुत्रीयों से वंश बढ़ता है।

सबसे पहले शिव निराकारी था। देखे चित्र नं. ९ :-

निराकारी शिव

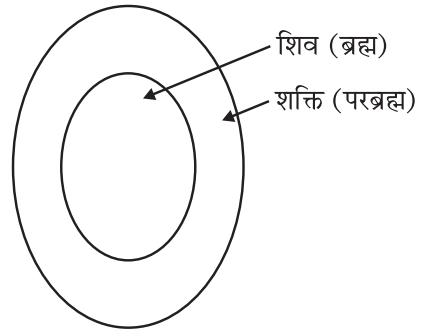

चित्र ९

अन्दर के बीज (शिव) को ब्रह्म कहते हैं और बाहर का जो कवच है वह शिव का तेज है उसे परब्रह्म कहते है। परब्रह्म को शिव की शक्ति भी कहते हैं। जो शिव की रक्षा करती है। जो शिव के उपर कवच का कार्य करती हैं। इस संसार में जब कुछ भी नहीं था तब केवल शिव शक्ति का प्रकाशित पुँज (पावर हाउस) का एक गोला था। जिसे स्वंभू भी कहते हैं। देखे चित्र नं. ९ :- केवल ऊँच ते ऊँच परमधाम ही था। वेदान्त दर्शन में कहा है कि परब्रह्म को जब सृष्टि रचने का संकल्प हुआ तो इच्छा हुई कि मैं एक से बहुत हो जाऊ। तब शिव निराकारी से आकारी बना। देखे चित्र नं. ११ :- आकारी शिव से अम्बिका की रचना हुई। फिर शिव शक्ति ने मिल कर लक्ष्मी नारायण की उत्पत्ति की।

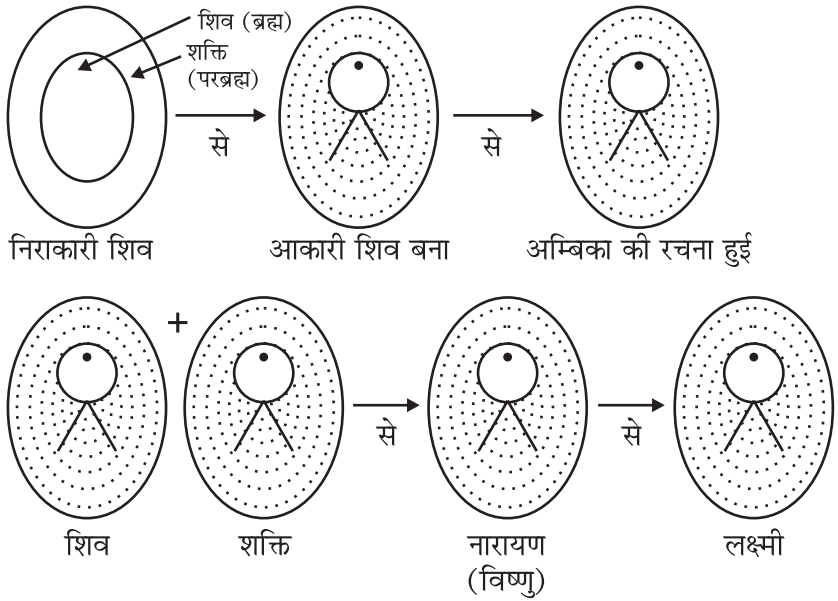

चित्र ११

जल का दूसरा नाम नार है। क्यों कि उस की उत्पत्ति नर से हुई है।

जल को नार कहा जाता है। आयन माना निवास स्थान। विष्णु को क्षीर सागर के उपर शेष शैय्या पर दिखाते हैं। इस लिए विष्णु का नाम नारायण हुआ। विष्णु अपने ही निज स्वरूप को याद करता है। वह योग निद्रा में रहता है। फिर विष्णु की नाभि से कमल निकला। शिव ने कमल पर ब्रह्मा की उत्पत्ति की। शिव की शक्ति से एक पिण्ड निकला पिण्ड से ब्रह्मा का जन्म हुआ। यह पिण्ड ब्रह्मा का शरीर है। देखें चित्र नं. १२

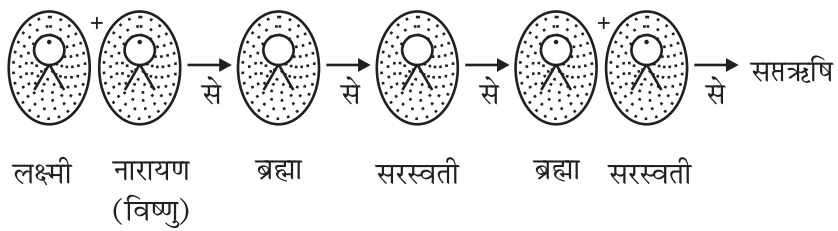

चित्र १२

इस पिण्ड के २ भाग हुए उपर का भाग भुवर्लोक और नीचे का भाग पृथ्वी कहलाया। फिर ब्रह्म-सरस्वती से सप्तर्षि का जन्म हुआ। फिर सप्त ऋषि से मनु सतरूपा का जन्म हुआ। देखें चित्र नं. १२ और १३

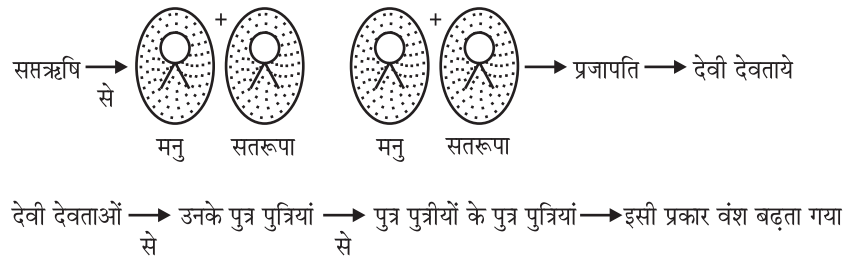

चित्र १३

देखें चित्र नं. ८ - फिर मनु सतरूपा से प्रजापति का जन्म हुआ। प्रजापति से देवी-देवताओं की सृष्टि उत्पन्न हुई। फिर देवी देवताओ से वंश बढता गया।

ब्रह्मा की आयु १०० वर्ष की है। जितनी एक ब्रह्मा की आयु उतनी ही विष्णु की और उतनी ही शिव की है। जब शिव परम तत्वोमे होता है तब वह शिवत्व होता हैं। तब इसमे पोजिटिव पावर होती हैं।

जब शिव ब्रह्माण्ड बनाते हैं तो उसकी शक्ति तब क्षीण हो जाती है तब वह दु:खी होकर काल रूप धारण करता हैं अपनी शक्ति को समेंटना चाहता हैं। तब ब्रह्मा ब्रह्माण्ड को समेट कर विष्णु में और विष्णु शिव में समा जाता है तो विष्णु शिव लोक में जले जाते है। शिव लोक खत्म नहीं होता है। शिव पूरे ब्रह्माण्ड को निराकारी एक परमधाम का पावर बना कर एक सैल बनाकर उसकी शक्ति अपने में समा लेता है उसमें कुछ नेगेटिव अेनर्जी बनने से वह जलने लग जाता है। १०० साल की नेग्टिविटि शिव में आ जाती है। शिव एक लाईट का गोला बन जाता है। तो वह किस में से निकला था ? महा शिव में से निकला था। तो अपनी पावर को पोजिटव करने के लिए व पावर को चार्ज करने के लिए महा शिव में समा जाएगा।

तब महा शिव को दूसरा ब्रह्माण्ड बनवाना है तो वो दूसरा शिव बैठा होगा उसे संकल्पों में बोल देगा तुम जा कर दूसरा ब्रह्माण्ड बनाओ। शिव की आयु ३६,००० कल्प है। ब्रह्मा के १०० साल के बराबर है। तब इस ब्रह्माण्ड का शिव भी बदल जाता है। कईयों में हर कल्प में ड्रामा अलग अलग बना। महा कल्पों में अलग अलग ड्रामा है। शास्त्रों में ज्ञान आटे में नमक मिसल है। ब्रह्मा के १०० साल होते है तो शास्त्र भी खत्म हो जाते हैं। फिर दूसरा ब्रह्मा अपने हिसाब से दूसरे शास्त्र लिखता है। शास्त्रों में बस इतना ही लिख दिया कि अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्ड है। इस प्रकार अनन्तान्नत ब्रह्माण्ड बनते रहते हैं बिगड़ते रहते हैं। ब्रह्माण्ड कितनी बार बना और बिगडा और ब्रह्माण्ड कितनी बार रीपीट हुआ इस का वर्णन शास्त्रों में नहीं है। शास्त्रों में इशारा है। जैसे - दैवी भागवत में पेज न. ६३९ में लिखा है कि महा विराट के रोम कूपों में असंख्य ब्रह्माण्ड विराजमान है। दैवी भागवत में पेज न. ६४१ में लिखा है कि एक-एक ब्रह्माण्ड में अलग-अलग ब्रह्मा-विष्णु-शिव हैं।

जैसे परलोक और पुनर्जन्म (नई पेज नं. ४०६ और पुरानी पेज नं. ३८८) में कहा है कि (एक पाद माया विभूति) में ही → युग पत प्रति पल अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड बना बिगड़ा करते हैं। युग पत माना समय प्रमाण। प्रति पल माना एक सैकिन्ड।

शिव अर्थात् ब्रह्मा की १०० वर्ष की आयु महा शिव के एक पल के बराबर है।

शिव की आयु = एक महा कल्प = ३६,००० कल्प

१ कल्प का अहोरात्र = ८,६४,००,००,००० वर्ष हैं।

ब्रह्मा-विष्णु-महेश को देवता कहते हैं। वे परमात्मा नहीं है। हिमालय वाले शंकर देवता नहीं है। शंकर शिव की रचना है। शिव में से शंकर का जन्म हुआ। शिव के आकारी स्वरूप के एक सैल से शंकर पैदा हुआ।

शंकर ने अपने अकारी स्वरूप से एक सैल पवन देव में डाल दिया। पवन और शंकर से रुद्र रूप में हनुमान पैदा हुआ। हनुमान को शंकर का ग्यारवाँ रूद्रावतार कहते हैं। शिव पुरान में शिव के २८ अवतार हैं उसमें से शंकर एक है।

स्कन्ध पुरान पेज नं. १३९ → विष्णुलोक और रूद्र लोक को इस ब्रह्माण्ड के बाहर बताया जाता है।

एक शिवशक्ति की आयु ब्रह्मा के १०० वर्ष के बराबर है। एक महा ब्रह्माण्ड की आयु एक लाख महा कल्प की आयु के बराबर है।

हरेक अलग-अलग ब्रह्माण्ड का रचियता अलग अलग शिव शक्ति होते है।

महा ब्रह्माण्ड का वर्णन देखे चित्र नं. १५

महा शिव है महा ब्रह्माण्ड का रचियता। नीचे महा ब्रह्माण्ड का स्टरक्चर (चित्र के रूप में) दिखाया गया है। बीच में महा ब्रह्माण्ड का महा परम धाम दिखाया है। इस महा परमधाम के उपर वाले धेरेमें महा शिव और महा शक्ति रहते हैं। महा शिव और महा शक्ति को महाकाल और महाकाली भी कहते हैं। महा शिव और महा शक्ति को महा परमात्मा कहते है।

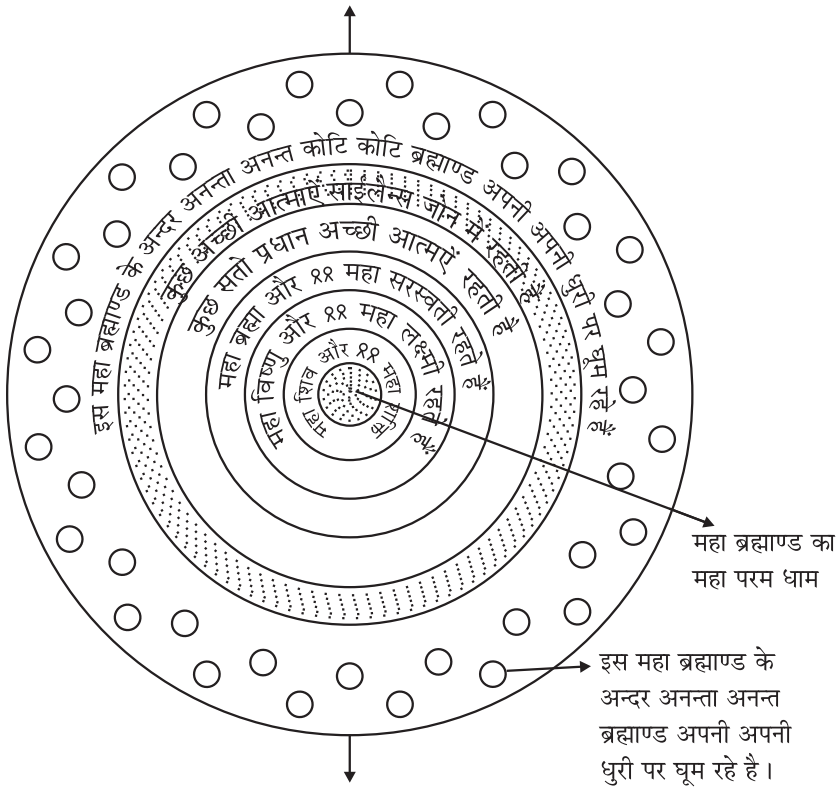

चित्र - १५

महा शिव और महा शक्ति इस महा ब्रह्माण्ड के रचियता है। इस के उपर वाले घेरे में महा विष्णु और महा लक्ष्मी रहते हैं। इस से भी ऊपर वाले घेरे में महा ब्रह्मा और महा सरस्वती रहते हैं। इस से भी ऊपर वाले घेरे में कुछ सतोप्रधान अच्छी आत्माऐं रहती है इससे भी ऊपर वाले घेरे में कुछ अच्छी आत्माऐं साईलैन्स जोन में रहती हैं। इसके ऊपर एक बड़ा घेरा दिखाया है। इस घेरे में अनन्ता अनन्त कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड अपनी-अपनी धुरी पर घूम रहे हैं। सब से पहले हमारा परम महा ब्रह्माण्ड देखे

चित्र नं. ४ नीचे आया जिसमें हमारा ब्रह्माण्ड था।

उस परम महा ब्रह्माण्ड में से हमारा महा ब्रह्माण्ड देखे चित्र नं. १५ नीचे आया जिसमें हमारा भारत वर्ष बना था। इस महा ब्रह्माण्ड में से भी हमारा ब्रह्माण्ड नीचे आया। जिस ब्रह्माण्ड के भूलोक में हमारा भारत वर्ष बना। देखे चित्र नं.१ और २ यह हमारा भूलोक पर हमारा भारत वर्ष वाला ब्रह्माण्ड बेहद के परम धाम का सेन्टर बना। यह हमारा ब्रह्माण्ड अनन्ता अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्डो, महा ब्रह्माण्डो और परम महा ब्रह्माण्डो से घिरा हुआ हैं। यह सभी अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड, महा ब्रह्माण्ड परम महा ब्रह्माण्ड हमारे भूलोक के भारत वर्ष वाले ब्रह्माण्ड के चारो और अपनी अपनी धुरी पर घूम रहे हैं। हमारा ब्रह्माण्ड सब से पहले हमारा महा ब्रह्माण्ड वाले महा शिवने शिव से संकल्पो में कह कर बनवाया था। और शिव ने ब्रह्मा से कह कर बनवाया था। सब से पहले जो हमारा ब्रह्माण्ड बना वह अधिक सतो प्रधान था। इसी प्रकार अनन्ता अनन्त कोटि कोटि शिव शक्तियो द्वारा हमारा ब्रह्माण्ड बनते गए, बनते गए। (एसे ही अनन्ता अनन्त बेअन्त ब्रह्माण्ड बनते गए, बनते गए और बिगडते गए, बिगडते गए)

जो हमारा सब से पहला ब्रह्माण्ड बना था वह अब तक के बने सभी ब्रह्माण्डो से अधिक सतो प्रधान था। यह महा ब्रह्माण्ड भी अपनी धुरी पर घूम रहा है।

जब महा शिव अनन्ता अनन्त शिव शक्तियों के द्वारा अनन्ता अन्नत ब्रह्माण्डों की रचना करवा देता है। एक एक शिव एक एक ब्रह्माण्ड का रचियता होता है। तब एक शिव की आयु ब्रह्मा के एक महा कल्प के बराबर होती है। एक महा कल्प में ३६,००० कल्प होते है। कई अरबों खरबों ब्रह्माण्ड मिलकर एक महा ब्रह्माण्ड बनता है। एक महा ब्रह्माण्ड की आयु एक लाख महा कल्पों के बराबर होती है। तो एक महा ब्रह्माण्ड एक लाख महा कल्प तक चलता है। तो बे हिसाब ब्रह्माण्ड है कभी किसी ब्रह्माण्ड की और कभी किसी ब्रह्माण्ड की आयु खत्म होती रहती है। हरेक

ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा – विष्णु – महेश होते है। (पेज नं. ६४१ दैवी भागवत एक–एक ब्रह्माण्ड में अलग अलग ब्रह्मा–विष्णु–शिव है।) अनन्ता अन्नत ब्रह्माण्ड है तो अनन्नता अनन्नत ब्रह्मा – विष्णु – महेश होंगे। ब्रह्मा – विष्णु – महेश को देवता कहते है। ब्रह्मा – विष्णु – महेश को परमात्मा नहीं कहेंगे। ब्रह्मा देवताए नमः – विष्णु देवताए नमः – शंकर देवताए नमः और अन्त में शिव परमात्माये नमः कहते है। तो शिव को परमात्मा इसलिए कहते हैं क्योंकि शिव का जन्म परम तत्त्वों में होता है। तो सभी शिव परमात्माएँ हो गये। अनन्नता अनन्त शिव अनन्ता–अनन्त परम–आत्माएँ हो गये। अनन्ता अनन्त शिव हैं तो अनन्त अनन्त परम आत्माएँ हो गए। तो महा शिव हो गए महा परमात्माएँ। सभी परम महा शिव हैं परम महा परमात्माए। परम महा शिव हैं परम महा ब्रह्माण्डों के रचयिता। परम महा शिव है परम महा काल स्वरूप। तब कोटि – कोटि ब्रह्माण्डों का रचियता हो गये कोटि कोटि शिव। क्योंकि अरबों खरबों ब्रह्माण्ड मिल कर एक महा ब्रह्माण्ड बनता है। इसलिए एक महा ब्रह्माण्ड का रचियता हो गया महा शिव। अरबों ब्रह्माण्ड मिल कर एक महा ब्रह्माण्ड बनता है। जब महाशिव अन्नन्त कोटि–कोटि ब्रह्माण्डों को सप्लाई करने की पावर जब परम महा शिव से नहीं ले सकते तब महा शिव की पावर जब खत्म होने को होती है। तब महा शिव महाकाल बन कर अपना विराट स्वरूप धारण करके सभी ब्रह्माण्डों को निराकारी पावर का एक–एक सैल बना लेता है जिन जिन रोम कूपों से यह ब्रह्माण्ड निकले थे उन उन रोम कूपों में सभी सैलों को वापिस अपने में समा लेता है। तब पूरे महा ब्रह्माण्ड का विनाश कर देता हैं। महा ब्रह्माण्ड का विनाश कब होगा ? जब वह पूरे ब्रह्माण्डों की पावर अपने में समा लेगा तब पूरे महा ब्रह्माण्ड का विनाश हो जाता है। पूरे महा ब्रह्माण्ड का विनाश करने के लिए अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्डों को अपने अन्दर समाना पड़ेगा। तो कितना टाईम होगा ? तो एक महा ब्रह्माण्ड की आयु ब्रह्मा के एक लाख महा कल्पों के बराबर है। जब महा शिव देखता है कि ब्रह्माण्डों में पावर नहीं रही है। इन चल रहे

ब्रह्माण्डों में पावर की कमी आ गई है। तब महा शिव महा काल बन कर महा ब्रह्माण्ड में चल रहे सभी ब्रह्माण्डों की पावर अपने अन्दर समा लेता है और महा ब्रह्माण्ड का विनाश कर देता है। तब उसके अन्दर नैग्टिविटि इकट्ठी होने के कारण उसकी तृप्ति नहीं होती। तब महा शिव में नैग्टिविटि भर जाती है और व अपने को चार्ज करना चाहता है और वह दुःखी रहने के कारण वह जलने लगता है क्योंकि उसमें सारी नेगेटिविटी भर गई होती हैं। और उसको चार्ज करना चाहता है तो उसमें पूरी पावर ना होने कारण वह पुनः पावर को पोजिटिव करने के लिए परम महा शिव में समा जाएगा।

क्यों कि महा शिव किस में से निकला था ? परम महा शिव से। अपनी पावर को चार्ज करने के लिए परम महा शिव के जिस रोम कूप से निकला था। उसी रोम कूप में एक निराकारी सैल बन कर परम महा शिव में समा जाएगा।

महा शिव का एक पल = परम महा शिव के एक पल के करोडवें भाग के समान है। लगभग ५०० करोड़ परम महा शिव है। परम महा शिव परम महा ब्रह्माण्डों के रचियता है। तो पाँच सौ करोड़ परम महा ब्रह्माण्ड हैं। परम महा शिवों के रचियता हैं सूक्ष्म वतन वाले ६.५ करोड़ परम परम महा शिव हैं। ६.५ करोड़ परम परम महा शिव के रचियता हैं दो करोड़ मूल वतन वाले। दो करोड मूल वतन वालों के रचियता हैं ९ लाख परमधाम वाले। और ९ लाख के भी रचियता है १६१०८ और १६१०८ के भी रचियता है १००८ विष्णु की माला वाले। १००८ के भी रचियता हैं १०८ बीज रूप माला वाले। १०८ हैं पदमा पदम महा शिव और १०८ पदमा पदम महाशिव के रचयिता है २४ और २४ के भी रचयिता है १२ और १२ के भी रचयिता है ८ (अष्ट रत्न) और अष्ट रत्न के भी रचयिता है बेहद के महाशिव और बेहद की महा शक्ति।

६.अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों का महाकाल प्रलय

(बेहद का अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों का महाकाल प्रलय/बेहद का महा कालचक्र/बेहद का समय का चक्र :)

कलिक पुरान में कहा है कि स्वतन्त्रता के बाद भारत में एक ऐसे महा पुरुष का अलौकिक जन्म होगा। जो वैज्ञानिकों का भी वैज्ञानिक होगा। वह आत्मा और परमात्मा के रहस्य को प्रकट करेगा। आत्म ज्ञान उसकी देन होगी। उसकी वेष-भूषा साधारण होगी उस का स्वास्थ्य बालकों जैसा होगा। शास्त्रों का प्रकाण्ड पंडित एवम् मानवता वादी होगा। वह कलिक अवतार होगा। उसका जन्म गुजरात के अहमदाबाद में होगा।

बेहद के भगवान भगवती । बेहद के महाकाल/महाकाली/ बेहद के महाशिव महा शक्ति द्वारा बेहद का अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों का महाकाल प्रलय :.....

जिस बेहद के परब्रह्म परमेश्वर से दूसरा श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है जिससे बढ़कर ना कोई सूक्ष्म है ना कोई महान है।

बेहद के भगवान ही महाकाल है। वही अनादि सत्य है महा काल अनादि है इनको सीमित नहीं किया जा सकता। बेहद के कालातीत भगवान बेहद के महाकाल हैं वही बेहद के और हद के ब्रह्माण्डों के प्रशासक है। बेहद का ब्रह्माण्ड अर्थात् बेहद के तीनों लोक (स्थूल वतन + सूक्ष्म वतन + मूल वतन) बेहद के महा काल बेहद के अमृत है। वे सत् असत् से परे हैं उनके रोम रोम में अनन्ता अनन्त हद और बेहद के ब्रह्माण्ड समाए हुए हैं। बेहद के महा विराट स्वरूप में उनके रोम कूपों में अनन्ता अनन्त कोटि-कोटि ब्रह्माण्ड विराज मान हैं।

परलोक और पुनर्जन्म → (नई पेज नं. ६ और ७ पुरानी २ और ३) अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड स्वरूप इस संसार में एक एक ब्रह्माण्ड में अनन्ता

अनन्त जीव हैं। एक एक जीव के अनन्ता अनन्त जन्म में एक एक जन्म में अनन्ता अनन्त कर्म हैं। अनन्ता अनन्त कर्मो में एक एक कर्म के अनन्ता अनन्त फल है।)

इसलिए अनन्ता अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्ड हैं। अनन्ता अनन्त परम तत्त्व है। अनन्ता अनन्त कलर हैं। अनन्ता अनन्त कलर कम्बीनेशनज हैं। सभी के नैन, नक्श, रूप, रंग, अनन्त है। वहाँ की कल्पना करना भी मुश्किल है। क्योंकि कोटि-कोटि ब्रह्माण्डों में अलग अलग परम तत्त्व हैं। एक का दूसरे से नहीं मिलता।

परलोक और पुनर्जन्म → (पुरानी पेज नं. ३८९, नई पेज नं. ४०६)- (एक पाद माया विभूति) में ही युगपत प्रतिपल अनन्ता अनन्त ब्रह्माण्ड बना बिगड़ा करते हैं।

युगपत माना समय प्रमाण। प्रतिपल माना एक सैकिन्ड।

(पेज नं. ६४१ देवी भागवत) एक एक ब्रह्माण्ड में अलग अलग ब्रह्मा - विष्णु - शिव हैं।

अत: एक ही बेहद के महाकाल पुरूष अनादि है काल में संख्या है अत: वह सादी हुआ। सादी मृत्यु तत्त्व है। असत्य हैं। बेहद के कालातीत भगवान की बेहद की शक्ति बेहद की महाकाली है। बेहद की प्रकृति (माँ) और बेहद के पुरुष (बाप) बेहद के कालातीत है। देशातीत हैं। देश और काल बेहद की प्रकृति और पुरूष को सीमित नहीं कर सकते।

वही जब निराकारी होते हैं तो उन को बेहद के निर्गुण ब्रह्म कहते हैं।

वही आकारी स्वरूप धारण करते हैं तो उन्हें बेहद के ज्योर्ति ब्रह्म कहते है।

जब वह साकार में आते हैं तो उन्हें बेहद के सगुण ब्रह्म कहते हैं।

यह बेहद के परम धाम् के ३ रूप है यह एक बेहद का पुरुषोत्तम तत्त्व है। यह बेहद के महाशिव और महाशक्ति हैं।

निर्गुण ब्रह्म = १/३ भाग

ज्योर्ति ब्रह्म = १/३ भाग १/३+१/३+१/३ = १

सगुण ब्रह्म = १/३ भाग

यह एक ही बेहद का पुरुषोत्तम तत्त्व हैं।

बेहद के महाकाल तीनों रूप धारण करते हैं।

यही बेहद का अक्षर ब्रह्म है जो कि सदा अविनाशी ही रहते हैं।

यही पुरुषोत्तम तत्त्व ही सच्चिदानन्द स्वरूप है। अखण्ड सत्य है। यह बेहद की महा शक्ति उनकी बेहद की स्वरूपा शक्ति है। उनके स्वरूप के साथ अभिन्न है। योग के द्वारा दोनो एक हो जाते है।

यही बेहद की आद्या शक्ति बेहद की परमेश्वरी है। यही बेहद की जगदीशवरी है। यही बैहद की जगत जननी है।

बेहद की महाकाल प्रलय बेहद के महाकाल करते हैं। सारे विश्व का विनाश हो जाने पर भी एक मात्र बेहद के सदा शिव ही विराजमान रहते है।

बेहद सृष्टि की उत्पत्ति के समय इस ब्रह्ममय तत्त्व से प्रकाशित पुंज में घर्षन होने से बेहद की निराकारी आकारी और साकारी सृष्टि की उत्पत्ति होने में बेअन्त कई अरबों खरबों वर्ष लगते हैं। जिसका वेदान्त दर्शन में वर्णन हैं। परब्रह्म को संकल्प आया कि मैं एक से अनेक हो जाऊँ। यह बेहद की ज्योर्ति रूपा मूल अनादि चेतन शक्ति समस्त जड़ चेतन की उत्पत्ति का ही मूल कारण है।

बेहद की महाकाल प्रलय में सारे विश्व की स्थूल शक्तियाँ सूक्ष्म में और सूक्ष्म से अति सूक्ष्म में और अति सूक्ष्म से निराकारी में परिवर्तन हो जाती है।

यह अव्यक्त शक्तियाँ एक पारे की तरह सिमटती सिमटती, एक पारे की तरह एकत्रित होते होते एक बेहद के महा शिव शक्ति का प्रकाशित पुँज के रूप में एक परम लाईट अथवा पावर का गोला बन जाता है। जिसे स्वयंभु व परब्रह्म कहते हैं। सारा संसार (बेहद का स्थूल, सूक्ष्म और मूल

वतन) इस पावर हाऊस में समा जाता है। यही बेहद के शिव शक्ति का अध्यात्मिक निवास स्थान है।)

मानव देह में यह स्थान मस्तक में स्थित सहस्त्र कमल दल में अवस्थित है। अनन्त कोटि कोटि ब्रह्माण्डों का भेद होने पर इसकी प्राप्ति होती है।

Science में Law of Conservation of energy कहता है कि In this Universe energy can neither be created and nor be destroyed, but it is transferable (changable). But it can be transferred (changed) from one form to another form. But the total Sum of energy remains constant.

जब इस सृष्टि में कुछ भी नहीं था। ना यह स्थूल वतन था, ना सूक्ष्म वतन था, ना ही मूल वतन था और ना ही निराकारी दुनिया थी तो फिर क्या था ?

सृष्टि कभी भी अनाथ नहीं होती। एक बेहद का पावर हाऊस का प्रकाशित पुँज का परम लाईट का गोला था। जिसे बेहद का परब्रह्म कहते है।

अनन्त समय से अन्त काल से इस पावर का विभाजन होते होते निराकारी से आकारी और आकारी से साकारी सृष्टियाँ बनी। आत्माऐं भी नं.बार कैसे बनी ? यह क्यों बनी ? कैसे बनी ? और कब बनी ? यह संकल्प भी कैसे क्रियेट हुआ ? पहले अन्डा आया या पहले मुर्गी आई ? जिस प्रश्न का उत्तर साईन्स वाले भी नहीं दे सकते। क्योंकि साइन्स से उपर साईलैन्स की शक्ति है, साईलैन्स से उपर बेहद की परमात्मिक शक्ति है। यह बेहद और हद के ब्रह्माण्ड कैसे बने ? क्यों बने ? कब बने ? यह हद और बेहद की हिस्ट्री ज्योग्राफी कैसे बनी। यह बेहद के ४ धाम कैसे बने। यदि आप इन प्रश्नों के सही उत्तर जानना चाहते हैं तो आप यहाँ आकर सुनिए यदि आप में परम सत्य, बेहद के परम पिता और परम माता

को पहिचानना चाहते है। तो वही साक्षात बेहद के मात-पिता बेहद के महाशिव और बेहद की महा शक्ति साकार में आए हुए है।

आप उनको दिव्य ज्ञान से पहिचान सकते हैं। यदि आप विश्व कल्याण में सहयोगी बन कर अपना बेहद का भाग्य बनाना चाहते हैं यदि आप में बेहद की जिज्ञासा भरी है। यदि आप इच्छा मात्रम् अविद्या बनकर बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण कर सकते है तो आप भी सहयोगी बन सकते है। क्योंकि सर्व के सहयोग से ही सुखमय संसार बनेगा। बेहद के भगवान भगवती एक सैकिन्ड में सारे विश्व को व्यक्त से अव्यक्त बना सकते है। सारे, ब्रह्माण्डों, महा ब्रह्माण्डों और परम महा ब्रह्माण्डों को एक सैकिन्ड में अपने महाविराट स्वरूप बेहद के महा काल स्वरूप में समेट सकते हैं।

लेकिन आप का भाग्य कैसे बनेगा ? ऐसा ना हो कि समय निकल जाने पर खून के आसुओँ से रो रो कर पश्चाताप करना पडे। अभी वक्त है थोड़ा समय बाकी है बेहद का महाकाल चक्र फिरने वाला है। जिससे सारी दुनिया उस बेहद के मात-पिता में एक सैकिन्ड में विलीन हो जाएगी।

बेहद के भगवान भगवती सारे संसार में बेहद के बीजों को ढूंढने के लिए आए है वह १०८ है। इनके सपोर्टिंग १००८ व १६१०८ है।

शायद उसमें से आप भी एक हो सकते है। बेहद का बाप बीजों को बचा कर बेहद के 'दिव्य विमान' से, 'दिव्य स्वरूप' प्रदान कर ले जाने के लिए आए हुए हैं।

वे एक ही जन्म और एक ही बार आते है। और सारी सृष्टि को एक पुष्पक विमान, लाईट स्वरूप का बैलून अर्थात् नैनों में बिठाकर लेने आए है।

उन बेहद के मात-पिता का जन्म दिव्य और अलौकिक है। इसलिए शास्त्रों में लिखा है केवल इशारा ही दिया हैं कि मुझ परम पिता परमात्मा को कोई कोटों में से कोई, कोई में से भी कोई उसमें से कोई विरला ही

पहिचान सकता है। क्योंकि वे भी साधारण नर-नारी के ही रूप में दिखाई देते है। इसलिए कहा है कि मेरे को मेरे साथ में रहने वाले भी नहीं पहिचान सकते।

जिनमें सारे विश्व को परिवर्तन करने की शक्ति हो और सारे विश्व के आदि मध्य और अन्त का ज्ञान हो। जिन में सारे विश्व को परिवर्तन करने की बेहद भावना हो वही बेहद के बाप हो सकते है।

क्योंकि जिनमें से यह बेहद के और हद के तीनों लोक बने है। वे ही बेहद के परम पिता परमात्मा हो सकते है।

बेहद का कालचक्र कैसे फिरता है।

काल अर्थात् समय, हर सैकिन्ड, हर पल समय परिवर्तनशील है। इस परिवर्तन का आधार क्या है। 'गति' (मोशन) साइन्स वाले भी कहते है की समय गतिशील है। अब यह गति कहाँ से मिलती है ? पावर से। बेहद की पावर से। बेहद का पावर हाऊस कौन है ? बेहद के महा-शिव-शक्ति बेहद के महाकाल-महाकाली।

उद्धारण : जैसे एक अव्यक्त आत्मा अनेक जीव आत्माओं में विभाग सा हुआ। एक अनादि संकल्प से अनेक संकल्प बने, एक देश से अनेक देश बने है, एक इच्छा अनेक इच्छाओं में विभक्त हुई है। एक बुद्धि अनेक बुद्धियों में विभक्त हुई है। एक मन अनेक मनों में विभक्त हुआ है। एक महाविराट शरीर अनेक शरीरो में विभक्त हुआ है। इसी प्रकार काल भी परम महान (बेहद के पावर पुंज) से परमाणु तक विभक्त हुआ है। जिस परमाणु का और विभाजन नहीं हो सकता। उस १००% परम लाईट के बेहद के पावर पुंज जिन को स्वंभु भी कहते हैं। जिस सारे का यह परमाणु अंश है उसे परम महान भी कहते है। और बेहद के परब्रह्म और ब्रह्म भी कहते हैं।

बेहद के संसार और हद के संसार के संसरने (चलने) का नाम ही

बेहद की काल गति है। इस दुनिया में सब कुछ गतिशील है। यदि गति तत्व ना हो तो सारा संसार सिकुड़ कर Riged (ठोस) हो कर सिकुड़ कर एक हो जाए। शुभ कर्म से गति स्वर्ग में होती है। यह कोई Blind Force (अन्ध शक्ति) नहीं है।

गति (मोशन) एक अव्यक्त तत्व ही है। साईन्स वाले भी कहते हैं कि गति (मोशन अर्थात चाल) बिना कोई क्रिया हो नही सकती यह गति बेहद के महा शिव और बेहद की शिव की शक्ति अर्थात बेहद के महाकाल और महा काली की पावर से मिलती है। संसार का परमाणु – परमाणु, अणु – अणु हरेक सितारा, सूर्य मण्डल, चन्द्रमा मण्डल, नक्षत्र मण्डल, ग्रह, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु हद के और बेहद के ब्रह्माण्ड, महा ब्रह्माण्ड, परम महा ब्रह्माण्ड, सभी लोक परलोको, जीवों, पदार्थो, तत्वों, जीवों का जीवन गति से ही गतिशील है। शुभ कर्म से जीव की गति स्वर्गलोक में होती है और पाप कर्म से मनुष्य की गति नर्क लोक में होती है। फिर लौट कर इसी लोक में आते है। यह गति जब इच्छा से युक्त होती है तो इच्छा शक्ति कहलाती है। ज्ञान से युक्त होती है तो ज्ञान शक्ति कहलाती है। मनुष्य दिन में लगभग २१,६०० श्वास लेता और छोड़ता है। इसी क्रम से उसकी रात भी पूरी हो जाती है। काल श्वास से अभिन्न है क्यों कि 'काल' श्वास की अवधि बन कर श्वास के साथ ही अन्दर जाता है। फिर श्वास के साथ ही बाहर आता है। इसी प्रकार 'मन' की गति, नाड़ी गति, रक्त गति बुद्धि की गति, जीव की गति, परम गति यही काल से युक्त होती है तो काल गति कहलाती है। पुरूष का पुरूषत्व गति ही है क्यों कि यह कर्म गति ही सब की गति का कारण है। स्वभाव और संस्कारों का बार–बार पुनरावर्तन होना ही समय का पुनरावर्तन है। यह गति तत्व ना हो तो सारा संसार पुरूषार्थ हीन हो जाए। सारा संसार जड़ हो जाए कोई हिल भी ना सके। फिर यह दिन–रात का चक्र, वारों का चक्र, शुक्ल पक्ष – कृष्ण पक्ष का चक्र, ऋतुओं

का चक्र, ज्योतिष चक्र, इस प्रकार देवो के उत्तरायण – दक्षिणायन का चक्र चलता है जो देवों के दिन–रात के रूप में देवो की आयु को हरता (क्षीण) करता रहता है। फिर सत युग, त्रेता, द्वापर, कलियुग का चक्र यह मनु–इन्द्रादि की आयु को हरता है। मनु सतरूपा का काल (समय) मनवन्तर कहलाता है। ब्रह्मा के १ दिन में १४ मनु समाप्त हो जाते हैं। फिर ब्रह्मा के दिन–रात का चक्र यह कल्प चक्र कहलाता है यह कल्प चक्र ब्रह्मा की १०० वर्ष की आयु को समाप्त कर देता है। ब्रह्मा के अन्त होने पर फिर समय पाकर फिर ब्रह्मा का जन्म होता है। इस प्रकार संसार की उत्पत्ति – स्थिति – प्रलय – महाप्रलय का चक्र निरन्तर चलता ही रहता है। यह महा कल्प चक्र कहलाता है। जन्म, जवानी, बुढ़ापा, मृत्यु का पुनरावर्तन ही काल चक्र है। शुभ कर्म से मनुष्य स्वर्ग लोक में जाते हैं और पाप कर्म से मनुष्य नर्क में जाते हैं। फिर लौट कर इसी लोक में आते है। यह चींटी से ब्रह्मा तक सब का पुनर्जन्म सिद्ध करता है। इस काल चक्र से कोई भी बचा हुआ नहीं है।

यही बेहद के भगवान भगवती की स्वभाव–शक्ति (योग माया) बन कर अणु–अणु में प्रकट हो कर सभी जड़–चेतन पदार्थो, जीव शरीरों बेहद के और हद के लोको, परलोकों का निर्माण करती है। यह वैज्ञानिकों की अन्ध शक्ति नही हैं। यह बेहद के महा शिव और महा शक्ति, (बेहद के महा काल और महा काली), (बेहद के भगवान – भगवती), की पूर्ण "ज्ञान से युक्त क्रिया शक्ति है।" यही सारे जड़, चेतन पदार्थो जीवों के स्वभाव संस्कार के रूप में दिखाई देती है। जो भाव बार–बार प्रकट होता है वह स्वभाव बन जाता है। स्वभाव समय काल के आधीन होता है। जिस से हमारा वायुमण्डल बनता है इस वायु मण्डल से हमारी प्रकृति (शरीर) की रचना हुई है। यह स्वभाव चक्र (वासना चक्र) ही काल अर्थात् समय का

चक्र है। इस हद और बेहद के काल चक्र को काटने (समाप्त) करने के लिए बेहद के परम पिता परमात्मा साकार रूप में धरती पर आ चुके हैं। उन्हे आप दिव्य ज्ञान-योग स्वरूप से पहिचान सकते है। जोकि भूत नाथ बन कर सारे संसार को स्थूल से सूक्ष्म में, सूक्ष्म से अति सूक्ष्म में और अति सूक्ष्म से निराकारी में और निराकारी से बेहद के प्रकाशित पावर पुंज अर्थात् स्वंभु में परिवर्तित कर देंगे। यह बेहद के भगवान भगवती दिव्य विमान द्वारा दिव्य स्वरुप प्रदान करके इस ५ तत्वो के पिंजरे से छुडा कर बेहद की मुक्ति और जीवन मुक्ति दे कर अपने नैनो में बिठा कर इस मृत्यु लोक से बेहद के अमर लोक में ले जाने के लिए साकार में आये हैं। आप भी आकर बेहद के मात-पिता के संकल्पो को साकार कर के विश्व कल्याण अथवा विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बन कर अपना भाग्य बना सकते हैं। आईये आपका स्वागत करते हैं।

संस्कारों का पुनरावर्तन ही समय का पुनरावर्तन है जो समय का चक्र कहलाता है।

बेहद के महाकाल बाप बेहद के कालाग्नि रूद्र रूप धारी विराट स्वरूप धारण कर के परम अग्नि तत्त्व (परम कालाग्नि) बरसा कर सारी सृष्टि को व्यक्त से अव्यक्त कर के अपने में समा लेंगे। वे सभी भूतों को खा जाएँगे। अपने परम दिव्य तेज से सारी सृष्टि को सूक्ष्म बना कर इस मृत्यु लोक का विनाश कर के बेहद के अमर लोक में ले जाएंगे जहाँ परम शान्ति ही शान्ति है।

बेहद का परम धाम :

जो प्राणी विवेकशील बुद्धि से युक्त रहता है संयमित और पवित्र भाव में स्थित रहता है वह उस परम पद परमधाम को प्राप्त कर लेता है यही अमर तत्त्व है जिनमें कुटिलता, असत्य और कपट का अभाव होता है

उन्हीं को यह विकार रहित पवित्र ब्रह्म लोक मिलता है। कर्म के निष्काम करने से मृत्यु को पार कर तत्त्व ज्ञान के प्रकाश में अमृत का रस लेता है आनन्दमय परब्रह्म को प्रत्यक्ष प्राप्त कर लेता है। परम धाम दिव्य स्वरूप की अनुभूति साक्षात परमात्मा की ही प्राप्ति है।

त्रिगुणातीत, भावातीत, ब्रह्मानन्द स्वरूपम्, सत्यानन्द स्वरूपम्, नित्यानन्द स्वरूपम्, अखण्डमण्डलाकारम, कर्मातीत, अतिन्द्रीय सुख से परे, गुणातीत, अमरतत्त्व, निरंजन जहाँ पर न मन, बुद्धि और संस्कार होते है न ही दिव्य दृष्टि होती है। स्वच्छन्द विचरण होता है सुख दुःख से परे निसंकल्प अवस्था में होते हैं।

७. पितृयान - देवयान मार्ग

(१) चन्द्र पर पितृ लोक है - पितृयान मार्ग

शरीर से निकल कर लोक लोकान्तर तक या जन्म जन्मान्तर तक जाने वाला सूक्ष्म शरीर ही है। जिस में ५ कर्मेन्द्रियाँ,५ प्राण, ५ ज्ञानेन्द्रियाँ मन और बुद्धि यह १७ तत्त्व है। १७ तत्त्वों में मन प्रधान है। मन चन्द्रमा का अंश है। इसलिए चन्द्रमा के आकर्षण से वह चन्द्र लोक ही पहुँचेगा। जैसे मिट्टी का ढेला पृथ्वी की और आता है। पृथ्वी आत्माओं की – tive Gravity पावर से बनी है। इसलिए कोई भी चीज जब उपर से फैंकते है तो वह उपर से नीचे इसलिए आती है क्योंकि पृथ्वी में आत्माओं की ग्रेवटी पावर है।

इसलिए मन का गुरुत्व आकर्षण चन्द्र के साथ है। मन चंद्र का अंश हैं। मन चन्द्र का कारक है वही पित्र लोक है। इसलिए मनुष्य की पितृलोक में गति होती है। यह पितृयान मार्ग है।

(२) देवयान मार्ग :

बुद्धि तत्त्व सूर्य का अंश है। जो तपस्वी योगी व प्रबल उपासक है वे दिव्य बुद्धि की शक्ति को ताकतवर (प्रबल) कर के मन को दबा लेते हैं। इसलिए साईन्स के हिसाब से बुद्धि पावर फुल होने के कारण उन पर ज्ञान सूर्य का आकर्षण हो जाता है और वह ज्ञान सूर्य की और चल पडते हैं। यह देवयान मार्ग कहा गया है जो स्वयं प्रकाशमान है।

तीसरी प्रकार की गति।

यह सब से बुरी गति है जो जघन्य (निकृष्ट) है। पृत्वी के पदार्थो, धन, पशु, ग्रह आदि में ही जिन का मन अधिक फस जाता है तो पृथ्वी का आवरण (घेरा) मन पर चढ़ जाता है।

जैसे तुम्बे में तैरने की शक्ति होने पर भी यदि मिट्टी से उसे खूब लपेट दिया जाए तो जल से उपर आने की उसकी शक्ति दब जाती है और वह जल में डूब जाता है।

इसी प्रकार देह के पदार्थो की अधिक वासना होने पर उसके मन की शक्ति दब जाती है। उसकी चन्द्र लोक की गति नहीं बनती। बार बार उत्पन्न होने वाले और दिन में सैंकड़ों बार मर जाने वाले कीट पतंगों के प्रवाह में पड़ जाता है। बार बार पैदा होना और मरते जाना। शास्त्रों में इस गति को बुरी गति माना है। इस से उद्धार पाना बहुत ही कठिन है। चौरासी के चक्कर में पड़ा रहता है। बेहद की माँ की कृपा हो तब वह कर्मों से निकलता निकलता काफी समय (कालान्तर) में मनुष्य योनि में आ पाता है। इसलिए भारतीय संस्कृति में सब लोग कहा करते है कि मृत्यु समय में देह और मोह कराने वाली बातें उस मरने वाले के समीप नहीं करनी चाहिए। इसलिए जब कोई मरता है तो बोलते हैं राम नाम सत्य है। सत गुराँ दी मत है।

(३) कयामत का दिन :

मुसलमान लोग कहते है कि कयामत के दिन पर अल्ला ताला नूर स्वरूप से कब्र में से निकाल कर ले जाएगा या तो फरिश्ता बना कर जन्नत में ले जाएगा या शैतान बनाएगा। अभी कयामत का दिन चल रहा है। कब्र में से निकल निकल कर ३ तत्त्वों में आ रहे हैं।

बेहद के महाकाल सभी भूतों को नाथ कर मुक्ति दे देंगे।

८ - अव्यक्त वाणी
(ब्रह्माकुमार कुमारी के लिये)

भारत के माउन्ट आबु में ब्रह्मा कुमारी आश्रम में जो परमात्मा की अव्यक्त वाणी चलती हैं इन में बताया हैं कि :-

(९-१-७५, पेज नं. ११) इन्तजार की बजाए इन्तजाम करो

१६-१-७५ ज्वाला रूप अवस्था

१८-१-७५ साक्षात मूर्त और फरिश्ता मूर्त बनने का निमन्त्रण

३०-१-७५ सैकिन्ड में व्यक्त से अव्यक्त होने की स्पीड़

९-२-७५ अध्यात्मिक शक्तियों द्वारा विश्व परिवर्तन कैसे ?

२९-८-७५ अब विधि की स्टेज को पार कर सिद्धि स्वरूप बनना है।

१०-९-७५ नालेज फुल और पावर फुल आत्मा ही सक्सैस फुल

१३-९-७५ विश्व परिवर्तन ही ब्राह्मण जीवन का विशेष कर्तव्य है।

१४-९-७५ अकाल तख्त-नशीन और महाकाल मूर्त (जिसको काल नहीं खा सकता) बन समेटने की शक्ति का प्रयोग करो।

२०-९-७५ शक्ति होते हुए भी जीवन में सफलता और संतुष्टता क्यों नहीं ?

२१-९-७५ फरिश्ता अर्थात् जिस का एक बाप के सिवाए कोई रिश्ता नहीं।

३०-९-७५ सर्व श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाले अपने ज्ञान के प्रकाश से चन्द्रमा (ब्रह्मा) को १६ कला प्रकाशित करने वाले ज्ञान सूर्य शिव बाबा बोले :-

८-१०-७५ मास्टर ज्ञान-स्वरूप बनने की प्रेरणा विश्व रूपी बेहद ड्रामा में मुख्य अथवा विशेष पार्टधारी बनाने वाले तथा अज्ञान

अन्धकार मिटाने वाले ज्ञान सूर्य शिव बाबा बोले :-

११-१०-७५ अन्तवाहक रूप द्वारा परिभ्रमण।

१२-१०-७५ कम्पलेन समाप्त कर कम्पलीट बनने की प्रेरणा।

१६-१०-७५ संकल्प शक्ति को कन्ट्रोल कर सिद्धि स्वरूप बनने की युक्तियाँ।

१९-१०-७५ माया को ललकारने वाला लशकर ही अपना झण्डा बुलन्द कर सकेगा।

२०-१०-७५ त्याग मूर्त और तपस्वी मूर्त सेवाधारी ही यथार्थ टीचर।

२१-१०-७५ बेहद की वैराग्य वृत्ति ही विश्व परिवर्तन का आधार।

२३-१०-७५ इन्तजार को छोडकर इन्तजाम करो। विश्व की तकदीर को ऊँचा बनाने वाले मायावी सृष्टि का महाविनाश कर दैवी सृष्टि की स्थापना करनेवाले रचियता शिव बाबा, नव निर्माण के इन्तजाम में एक जुट हो जाने का आह्वान करते हुए बोले :

२४-१०-७५ शक्तियों का विशेष गुण निर्भयता - शिव-शक्ति सैना के सर्वोच्च अधिपति (बेहद का बाप) सर्व शक्तिवान शिव बाबा ने पंजाब व गुजरात जोन की शिव शक्तियों को सम्बोधित करते हुए यह मधुर वाक्य उच्चारे :

६९ की वाणी पेज नं. ३० "भारत माता शक्ति अवतार" अन्त का यही नारा है। सन शोज फादर ड्रामा की नूध कराएगी।

१८-५-६९ पेज नं. ७३ : अन्तिम नारा भी भारत माता शक्ति अवतार का गायन है, गोपी माता थोड़े ही कहेंगे।

२१-३-८३ भारतमाता शक्ति अवतार नहीं तो भारत का उद्धार नहीं।

१-६-८३ पेज नं. १९३ कौन सी बात अभी रही हुई है ? नई दुनियाँ के लिए धरनी बना रहे हो। लेकिन नई दुनियाँ का आधार-

यह नई नालेज है। पहली आथारिटी तो नालेज की है ना! बाप की महिमा में भी पहली महिमा क्या आती है। 'ज्ञान सागर' कहते हैं ना! तो पहली महिमा है ज्ञान, उस नयें ज्ञान को दुनियाँ के आगे प्रत्यक्ष किया है? जब तक "यह नया ज्ञान" है - यह प्रत्यक्ष नहीं हुआ है तो ज्ञान दाता कैसे प्रत्यक्ष हो। पहले ज्ञान आता है फिर ज्ञान दाता आता है। तो ज्ञान दाता ऊँचे से ऊँचा है। एक ही वह ज्ञान दाता है, यह सिद्ध कैसे होगा? इस नये ज्ञान से सिद्ध होगा। आत्मा क्या कहती है और परमात्मा क्या कहता है, यह अन्तर जब तक मनुष्यों की बुद्धि में ना आये तब तक जो भी तिनके के सहारे पकड़े हुए है वह कैसे छोड़ेंगे? और एक का सहारा कैसे लेंगे। अभी तो छोटे छोटे तिनकों के सहारे पर चल रहे है, वो ही अपना आधार समझ रहे हैं। जब तक उन्हीं को ज्ञान द्वारा ज्ञान दाता का सहारा अनुभव नहीं हो। तब तक इन हद के बन्धनों से मुक्त हो नहीं सकते। अभी तक धरनी बनाने की, वायुमण्डल परिवर्तन करने की सेवा हुई है। अच्छा कार्य है, परिवार का प्यार है, यह प्यार का गुण वायुमण्डल को परिवर्तन करने के निमित्त बना। धरनी तो बन गई और बनती जाएगी। लेकिन जो फाउडेशन है, नवीनता है, बीज है वह है 'नया ज्ञान'। नि:स्वार्थ प्यार है, रूहानी प्यार है, यह तो अनुभव करते है, लेकिन अभी प्यार के साथ साथ 'ज्ञान की अथार्टी' वाली आत्माएँ हैं, सत्य ज्ञान की अथार्टी है, यह प्रत्यक्षता अभी रही हुई है। जो भी आते है वे समझें कि यह नया ज्ञान है, नई बात है। जो कोई ने, नहीं सुनाई वह यहां सुनी। यह वर्णन करे कि यह देने

वाला अथार्टी है। पवित्रता है, शान्ति है, प्यार है, स्वच्छता है, यह सब बातें तो फाउण्डेशन है, जिस फाउण्डेशन के आधार पर धरती परिवर्तन हुई है। यह भी ४ स्तम्भ है पहले जो किसी की भी बुद्धि इस तरह टिकती नहीं थी सो अभी इन ४ सत्म्भों के आधार द्वारा बुद्धि की आकर्षण होती है। यह परिवर्तन तो हुआ लेकिन अभी जो मुख्य बात है - नया ज्ञान उसका आवाज बुलन्द हो धर्म युद्ध भी तो अभी रही हुई है ना। अभी तो गुरुओं की गद्दी को कहाँ हिलाया है अभी तो टाल-टालियाँ आदि सब बहुत आराम से अपनी धुन में लगे हुये हैं। "बीज कब प्रत्यक्ष रूप में आता है? मालूम है बीज ऊपर कब आता है?" जब छोटी बडी टाल टालियाँ एकदम बिगर पत्तों की सुखी हुई डालियाँ रह जाती है तब बीज ऊपर प्रत्यक्ष होता है। तो उसका प्लेन बनाया है। जब अपनी स्टेज पर आते हैं तो अपने ओरीजनल नालेज की प्रत्यक्षा तो होनी चाहिए ना। अगर वरदान भूमि में आ कर भी सिर्फ कहें - शान्ति बहुत अच्छी, प्यार बहुत अच्छा है। सिर्फ यह थोडी बहुत झोली भर कर चले गये तो वरदान भूमि पर आ कर विशेष क्या ले गये! नया ज्ञान भी तो सिद्ध करना है ना। इसी नये ज्ञान की अथार्टी द्वारा ही आलमाइटी अर्थाटी सिद्ध होगा। देने वाला कौन! प्रेम और शान्ति मिलने से इतना जरूर समझते है कि इन्हीं को बनाने वाला कोई श्रेष्ठ है। लेकन 'स्वयं भगवान है' यह बहुत कोई विरला समझते। तो समझा, क्या रहा हुआ है! अब नई दुनियाँ के लिये नया ज्ञान चारों और फैलाओं, समझा। कोटो में कोई निकले लेकिन ऐसा आवाज निकले जो चारों

और पेपर्स में यह धूम मच जाये कि यह ब्रह्मा कुमारी दुनिया से नया ज्ञान देती है ! उसका आधार क्या मानती हैं, उसको सिद्ध कैसे करती हैं यह जब अखबारों में आये तब समझो । ज्ञान दाता का नगाड़ा बजा । समझा ? ज्ञान के प्रभाव में प्रभावित हों । ज्ञान के प्रभावशाली और प्रेम के प्रभावशाली में क्या अन्तर है ? ब्राह्मणों में भी दो भाग देखे ना । ब्राह्मण तो बने हैं लेकिन कोई प्यार के आधार पर, कोई ज्ञान और प्यार दोनों के आधार पर । तो दोनों में स्थिति का अन्तर है ना । जो प्यार को भी ज्ञान से समझते हैं, वह निर्विघ्न चलेंगे । जो सिर्फ प्यार के आधार पर चलते । वह शक्तिशाली आत्मा नहीं होंगे । ज्ञान का बल जरूर चाहिए । जिनका पढ़ाई से प्यार है, मरुली से प्यार है और जिनका सिर्फ परिवार से प्यार है, उन्हें में कितना अन्तर है ! ब्राह्मण जीवन अच्छी लगी, पवित्रता अच्छी लगी, इसी आधार पर आने वाले और ज्ञान की शक्ति के आधार पर आने वाले, उन में कितना अन्तर है । ज्ञान की मस्ती, अलौकिक, निराधार रहने वाली मस्ती है । वैसे प्रेम भी एक शक्ति है, लेकिन प्रेम की शक्ति वाले आधार के बिना चल नहीं सकते । कोई ना कोई आधार जरूर चाहिए । मनन शक्ति - ज्ञान की शक्ति वाले की होगी । जितनी मनन शक्ति होगी उतनी बुद्धि के एकाग्रता की शक्ति आटोमेटिकली आयेगी । और जहाँ बुद्धि की एकाग्रता है वहाँ परखने की और निर्णय करने की शक्ति स्वतः आती है । जहाँ ज्ञान का फाऊण्डेशन नहीं होगा वहाँ परखने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति कमजोर होगी । क्योंकि एकाग्रता नहीं । अच्छा ।

पेज नं. ३६-संजीवनी, वाणी ४-१-७१ :- गुजरात की राजधानी अहमदाबाद को सारे विश्व का लाईट हाउस बनाना है ।

खंड १ पेज नं. २४ :- अहमदाबाद पांडव भवन तैयार होने पर विश्व विजेता १०८ मनकों से कनेक्शन जोड़ने के लिए यही हो आवेंगे ना । क्योंकि गुजरात की राजधानी अहमदाबाद को सारे विश्व का लाईट हाऊस बनना है ।

संजीवनी पेज नं. ३६ :- गुजरात को लाईट हाऊस बनाओ । जो ना सिर्फ गुजरात का लाऊट हाउस हो बल्कि सारे विश्व का लाईट हाऊस हो । ऐसा परमात्मिक बाम्ब फैंको जो एक ठक्का हो । आत्माऐ दोड़ते हुए अपने एसलम पर पहुच जायें । अलग पहरे से बिन्दु रूप स्टेज का स्थिर अभ्यास होने पर पिछाड़ी में डायरेक्ट बाप से सीखोगे ।

२२-१-७० 'ज्ञान सूर्य के उदय होने पर सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा'' अर्थात् मुरलियों के सारे ही गूढ राज मुख्य मुख्य पार्ट धारियों के साथ ही खुल जावेंगे ।

संजीवनी पेज नं. १८ :- अंतिम पावरफुल बोम्ब परमात्म प्रत्यक्षता अभी शुरू नहीं की है - सिखाने वाला आलमाईटी अथार्टी है, ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है । यह बात अभी गुप्त है क्योंकि दूसरी और ज्ञान चन्द्रमा अभी अस्त नहीं हुआ है । इस अन्तिम बम्ब द्वारा हरेक ब्राह्मण के बीच बाप प्रत्यक्ष होगा विश्व में विश्व पिता स्पष्ट दिखाई देगा ।

१५-१२-०७ कोई भी सेवा कर रहे हो, बहुत अच्छा लेकिन अभी विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी हो ? हैं ? यह संकल्प किया है कि विश्व परिवर्तन में सदा सहयोगी रहेंगे । यह संकल्प किया ? क्योंकि आप लोग परमात्माओं की सेवा बहुत

सहज कर सकते हो । कैसे कर सकते हो ।

१५-१२-०७ यह तो डायरेक्ट ईश्वर के कार्य में सहयोगी बनना, कितना पुन्य है और पुन्य की पूंजी साथ में जाएगी और कुछ भी नहीं जाएगा ।

५-३-०८ आज के दिन तो इस हाल में यह झण्डा लहराया लेकिन अभी वह भी दिन आयेगा, आना ही है जब सारे विश्व में जगह-जगह पर यह झण्डा लहराने की सेरीमनी भी होगी । और सभी आत्माओं के दिल में यह आटोमेटिक गीत बजेगा ''हमारा बाबा आ गया । हमारा मुक्ति दाता वरदाता बाप आ गया ।'' सारे वर्ल्ड में यह आटोमेटिक सब के दिलों में गीत बजने शुरु हो जायेगा । आपके दिल में तो यह गीत बज रहा है ना । आ गया, मिल गया । वरदान मिल गये, दुआयें मिल गई, तो यह झण्डा, जैसे आपके दिल में लहराता रहता है ऐसे विश्व की आत्माओं के दिल में लहराना ही है । प्राप्ति नहीं कर सके वर्से की, लेकिन अहो प्रभु, आप आ गये, यह गीत तो गाना ही है ।

१८-१-९६ पेज नं. १०८ जो बच्चे साकार के बाद में आये है वे सोचते हैं कि ब्रह्मा बाबा ने अपना साकार पार्ट इतना जल्दी क्यों पूरा किया ? हम तो देखते ना ! हम तो मिलते ना ! सोचते होना ? लेकिन कल्प पहले का भी गायन है कि कौरव सैना के निमित बने हुए महावीर का कल्याण किस द्वारा हुआ ? शक्ति द्वारा हुआ ना ! तो शक्तियों का पार्ट ड्रामा में साकार रूप में नूँधा हुआ है । और सब मानते भी हैं कि मातृ शक्ति के बिना इस विश्व का कल्याण होना असम्भव है ।